अंक 11 व 12

1997

चैतन्य लहरी

" यह समझ लेना महत्वपूर्ण है कि आप कितने बहुमूल्य हैं; कितने असाधारण रूप से महत्वपूर्ण हैं। आप इस युग में जन्में और आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया– किस लिए ?इस विश्व का उद्धार करने के लिए, मानव को परिवर्तित करने के लिए तथा समुचित विश्व को परमात्मा के साम्राज्य में ले जाने के लिए। आपके सहज में होने का यही उद्धेश्य है।"

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

VISHWA NIRMALA DHARMA
UNIVERSAL PURE RELIGION

इस अंक में :

1 श्री कृष्ण पूजा– 23.8.1997 3

2 रूसी लोकचिकित्सा सम्मेलन 17

3 ईसा मसीह पूजा– गणपति पुले– 25.12.1997 19

4 विश्व समाचार 24

आस्ट्रेलिया राष्ट्रीय पूजा एवं जन कार्यक्रम–मार्च 1997

क्रोशिया और बोस्निया में प्रथम सहज योग का कार्यक्रम

अर्जेन्टिना में सहज कार्यक्रम

5 प्रपंच और सहजयोग 32

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस प्रकाशन का कोई भी अंश, प्रकाशक की अनुमति लिए बिना, किसी भी रूप में अथवा किसी भी जरिये से कहीं उद्धृत अथवा सम्प्रेषित न किया जाए। जो भी व्यक्ति इस प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनधिकृत कार्य करेगा उसके विरुद्ध दंडात्मक अभियोजन तथा क्षतिपूर्ति के लिए दीवानी दावा दायर किया जा सकता है।

प्रकाशक :
निर्मल ट्रान्सफॉर्मेशन प्राइवेट लिमिटेड,
8, चंद्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
कोथरुड, पौढ़ रोड, पुणे 411038
'ई' मेल का पता–
marketing@nirmalinfosys.com
वेबसाइट: www.nirmalinfosys.com
Tel. 9120 25286537. Fax. 9120 25286722

श्री कृष्ण पूजा

कबेला 23.8.1997

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

आज हम यहाँ श्री कृष्ण पूजा करने के लिए आए हैं। मैं जब अमेरिका गई तो उन्होंने मुझे महाकाली पूजा के लिए कहा, परन्तु मैंने कहा, "नहीं, मुझे केवल श्रीकृष्ण के विषय में ही बात करने दें, "क्योंकि पहले हमें यह महसूस करना है कि इस पूजा की कितनी शक्ति है। इस प्रकार हम श्रीकृष्ण को अपने अन्दर स्थापित करने वाले हैं। श्री कृष्ण ने स्वयं कहा है कि "जब जब भी धर्म का पतन होगा .....।" धर्म का मतलब जैसा हम समझते हैं हिन्दु धर्म, ईसाई धर्म या मुस्लिम धर्म नहीं है। यह सब तो मूर्खता है। धर्म का अर्थ है मानव में अन्तर्रचित आदि–वर्जन (Primodial Taboos) । इनके विषय में, मैं सोचती हूँ, हमसे कहीं अधिक यहाँ के आदिवासी जानते हैं। परन्तु हमने क्या किया? हमने उन पर प्रभुत्व जमाया और विवश होकर उन्हें अपनी जीवन शैली बदलनी पड़ी। आदि–वर्जनों को केवल तभी समझा जा सकता है जब लोग स्वयं को या परम्पराओं से प्राप्त ज्ञान को समझने का प्रयत्न कर रहे हों। सहज धर्म थोड़ा–सा भिन्न है क्योंकि यह न केवल उन विचारों से ऊँचा है जिनके विषय में हम बातचीत करते हैं बल्कि जो कुछ श्रीकृष्ण या श्रीराम ने कहा उनसे भी ऊँचा है। श्रीराम ने सोचा कि सर्वप्रथम मानव को अनुशासित किया जाए। जीवन के विषय में लोग गम्भीर हो जाएं तथा अपने अस्तित्व को भली–भांति जान लें। वे अपना सम्मान करें। यह सारी बातें बहुत समय पूर्व लिख दी गई थीं। लोग जब मूलतः निष्कपट थे तभी वो समझ गए थे कि जो भी कुछ हमारे हित में नहीं है वो हमें नहीं करना चाहिए। ये आदि–वर्जन हैं और मानव में अन्तर्रचित हैं।

अब मान लो मैं कहती हूँ, "शराब मत पिओ।" आप शराब पीए चले जाएंगें। यदि मैं कहूँ , "झूठ मत बोलो", तो आप झूठ बोलेंगे। यह मानव स्वभाव है। लोग आदि–वर्जनों के विरुद्ध चलते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि वे स्वतंत्र हैं और उन्हें इच्छानुसार कार्य करने की स्वतन्त्रता है। वास्तव में वे स्वतंत्र नहीं हैं। वे सभी प्रकार के प्रलोभनों या सम्मोहनों के वश में हैं और ये सब सम्मोहन मानव जीवन के विरुद्ध हैं। व्यक्ति का धर्मपरायण होना अत्यंत स्वाभाविक है। छोटे बच्चे प्रायः ऐसे होते हैं। उदाहरण के रूप में मैंने देखा है कि छोटे–छोटे बच्चे भी दूसरों के सामने निर्वस्त्र होने में सकुचाते हैं। लोगों के सम्मुख वे नग्न नहीं होते। इसका सबका वर्णन 'या देवी सर्व भूतेषू लज्जा रूपेण संस्थिता' में किया गया है। तो आपको लज्जाशील होना चाहिए। आपको नम्रतापूर्वक अपने शरीर का सम्मान करना चाहिए। आज के युग में यह बहुत महत्वपूर्ण है। आज शरीर प्रदर्शन महिलाओं की बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। महिलाएं आदिवासी बनने का प्रयत्न् कर रही हैं। पुराने समय में उनमें न तो यह विचार थे और न ही वे इतनी भ्रमित थीं। अतः

आदिवासी महिलाएं यद्यपि बहुत कम वस्त्र पहनती थीं फिर भी इसका अभिप्राय यौनाकर्षण/ पुरुषों को आकर्षित करना नहीं था। उनके पुरुष भी ऐसा आचरण न करते थे जिससे यह लगे कि वे महिलाओं के लिए कोई विशेष आकर्षण बिन्दु हैं। तो आप सब क्यों ऐसा करें ? पुरुषों का महिलाओं की ओर महिलाओं का पुरुषों की ओर आकर्षित होना अति हास्यास्पद है। परन्तु गलियों में, सड़कों पर चलते हुए आप यही सब होता देखते हैं। यह घोर अधर्म है, मेरे विचार में यह अभिशाप है। सहज योग में आने के पश्चात् भी आप जानते हैं, लोग यही करने लगते हैं। ऐसे लोगों को पागलखाने चला जाना चाहिए। सहज योग के लिए वे बेकार हैं। परन्तु आत्मा का प्रकाश आते ही धर्म प्रस्थापित हो जाता है।

श्रीराम के समय तो उन्हें सभी कुछ सिखाना पड़ा, मोज़िज़ को भी दस धर्मादेश बताने पड़े। परन्तु श्रीकृष्ण ने दूसरे ही ढंग से सोचा : कि पवित्रप्रेम का धर्म स्थापित किया जाए, पवित्र प्रेम का। उन्हें यह लगा कि श्रीराम के धर्म–वर्जन लोगों पर इसी प्रकार थोपे गए थे जैसे इस्लाम और ईसाई धर्म पर वर्जन थोपे गए। यह कभी कार्य नहीं करते। तो श्रीकृष्ण ने सोचा कि सब लोगों को स्वतंत्ररूप से पावन प्रेम विकसित करने का उपदेश दिया जाए। राधाजी, जो कि उनकी शक्ति थीं; आह्लाद–दायिनी कहलाती हैं। वे ही आनन्द, पावन आनन्द प्रदान करती हैं। अतः इन सब सीमित प्रकार के आकर्षणों का परिणाम भी कष्टकर होता है। आप जानते हैं कि मद्यपान चेतना के विरुद्ध है। आज चिकित्साशास्त्री तम्बाकू के दुष्प्रभावों की बात कर रहें हैं और कल जब जिगर के रोगों से लोग मरने लगेंगे तो यह शराब के दुष्प्रभावों के विषय में कहेंगे। तब ये शराब को वर्जित करेंगे। परन्तु आपके शरीर के लिए यह एक स्वाभाविक वर्जन है। आप यदि किसी ऐसे कार्य में लगे रहते हैं जो आपके और आपके शान्तिमय जीवन के लिए अहितकर है तो अधार्मिक बन रहे हैं। यह बात अच्छी तरह समझ ली जानी चाहिए कि सहज धर्म यह है कि आप स्वतंत्र हैं– कामुकता, लालच तथा सभी प्रकार के प्रलोभनों से पूर्णतः स्वतंत्र। आप इनसे ऊपर हैं– कहीं ऊँचे, कहीं ऊँचे। यह धर्म श्रीकृष्ण या श्रीराम द्वारा स्थापित धर्मों से कहीं ऊँचा है क्योंकि पूर्ण स्वतंत्रता में आपने इस अवस्था को प्राप्त किया है। अतः आपको धार्मिक होना है। अहितकर कार्य त्याग दें। मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि यह करें, यह न करें। हो सकता है कि मेरी बात आपको अच्छी न लगे परन्तु आपकी चैतन्य लहरियाँ एकदम से आपको बताएंगी। यह सहज धर्म है; इसमें, कहा जाता है कि आप काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से छुटकारा पा लेते हैं।

अब आप जान लें कि लोग किस प्रकार लालची हैं। किस चीज़ के लिए लालची हैं? यह अमेरिका तो उपभोक्तावाद से मरा जा रहा है। आप व्यापार तकनीक को देखे : अमेरिका में आप जितना चाहे धन बैंक से उधार ले सकते हैं। कोई समस्या नहीं। आप यदि ऋण नहीं लेते तो वे आपको पत्र भेजते हैं कि "आप बीस हज़ार डालर का ऋण क्यों नहीं ले लेते?" हम आपको यह चैक भेज रहे हैं। क्यों न इसे स्वीकार करें ? आप अति धनी बन जाते हैं। ऋण लेना अति सुगम है। मुझे बताया गया कि कुछ लोग तो ऋण लेकर गणपति पुले पूजा में आया करते थे। उनका चित्त सदा दूसरी बात पर

रहता कि किस प्रकार में यह ऋण लौटाऊँगा? मैंने कहा कि आप यह सब बन्द कर दें। तो वे ऋण लेकर गणपति पुले आ जाते हैं और फिर हरक्षण सोचते हैं कि मैं किस प्रकार यह ऋण चुकाऊँगा ? कैसे मैं यह कार्य करूंगा ? चित्त सदा विक्षिप्त रहता है, चाहे आप स्वहित में कुछ करना चाहें या गणपति पुले आना चाहें। तो ऐसा मस्तिष्क स्वतन्त्र नहीं होता। स्वतन्त्र मस्तिष्क वह है जिसका चित्त आत्मप्रकाश से प्रकाशित हो। परन्तु समस्या यह है कि हम अब भी मानवीय बन्धनों से आत्मसाक्षात्कार के उच्च जीवन की ओर उठ रहे हैं। जब हम उस स्तर (ऊँचाई) की ओर अग्रसर हो रहे हैं तो हमें महसूस करना होगा कि अंडे से जन्में उस पक्षी की तरह–जो अंडे के खोल को त्याग देता है– हमें भी भाई–बहन ,माता–पिता, पति–पत्नी आदि के रूप में लिप्त ये सब बन्धन तथा आन्तरिक बुराईयाँ त्यागनी होंगी। वे तुम्हें पतन की ओर घसीटना चाहते हैं। शराब पीते हुए वे आपको बुलाते हैं, आप भी कुछ पी लो। आप बिल्कुल सामाजिक नहीं हैं, आप बेकार हैं, पिछड़े हुए हैं।" इस प्रकार फैशन आरम्भ होता है। फैशन का यह सामूहिक कार्य न तो श्रीकृष्ण की देन है और न सहज की। सहज योग में आप इन सब मूर्खताओं से पूर्णतः मुक्त होते हैं। आप चाहें तो अच्छे वस्त्र पहनें और न चाहें तो न पहनें। आप स्वतन्त्र हैं, धन के बन्धनों से भी आप स्वतन्त्र हैं। यह अति महत्वपूर्ण है। धन के बन्धन एक अन्य बाधा है। मैं ऐसे योगियों को जानती हूँ जो धनार्जन के लिए सहजयोग में आए। किसलिए आप सहज योग में आते हैं ? धन के बन्धनों से मुक्ति पाने के लिए । सहजधर्म मैं पैसा आपके चरणों की धूल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं, इसका अधिक महत्व नहीं है। और हममें तो मूर्खताओं को सामूहिक रूप से स्वीकार करने का गुण भी है। इसे त्यागना होगा, विशेष रूप से अमेरिका में और इंग्लैंड में यह रुकना ही चाहिए।

हिप्पी के रूप में एक व्यक्ति आया। उसके बाल बन्दर जैसे लग रहे थे। मैं तो कहूँगी कि बन्दर कहीं ज्यादा अच्छा होता है। तो मैंने उससे पूछा, "आपके बाल ऐसे क्यों है ?" उसने उत्तर दिया, "क्योंकि मैं आदि–मानव बनना चाहता हूँ। अब हमें प्राचीनता अपनानी होगी" मैंने कहा, "परन्तु तुम्हारा मस्तिष्क तो आधुनिक है, अपने बालों को इस प्रकार बढ़ा कर तुम सोचते हो कि तुम आदि–मानव बन सकोगे? तुम आदिमानव नहीं बन सकते।" बाद में मुझे पता चला कि उसकी मृत्यु हो गई है। एक और ऐसा ही व्यक्ति आया, वह स्वर्ग तो नहीं सिधारा परन्तु पागलखाने चला गया। मैं ऐसे बहुत से लोगों से मिली हूँ। आप ऐसा क्यों करते हैं? क्योंकि यह फैशन है।

आप जानते हैं कि सभी प्रकार के रूपांकनकारों (Designers) के कारण इटली वैभवशाली हो रहा है। रूस में नये–नये धनी लोगों के विषय में एक कहावत है, यद्यपि रूस के लोग प्रायः ऐसे नहीं होते। फैशन के कारण वे किसी चीज़ को स्वीकार नहीं करते। एक व्यक्ति आया और कहने लगा, "हे भगवान! उस दिन आपका हाथ ही खो गया!" "कोई बात नहीं, परन्तु दुःख इस बात का है कि हाथ के साथ मेरी बहुमूल्य स्विस घड़ी भी चली गई।" "सच ? कौन सी घड़ी थी ?" "ये रोलैक्स थी।" हाथ चला गया तो कोई बात नहीं। रोलैक्स फैशन है। तो ये नये–नये धनी लोग हैं।

कुत्ते फैशन के पीछे नहीं भागते। मैंने कुत्तों

को फैशन करते नहीं देखा, और न ही बन्दरों को। मान लो इटली के रूपांकनकार उनके लिए कुछ बनाएं भी, तो भी वे इसके विषय में न सोचेंगे। हो सकता है उनके मालिक ये चीज़ खरीदें। परन्तु हमें पशु भी नहीं बनना। और न ही फैशन का गुलाम बनना है। कुछ दुकानें बहुत मंहगी हैं, क्यों ? क्योंकि वे रूपांकनकार (Designers) हैं आप सब को बताते हैं, "देखिए, ये जो मैंने पहना है यह रूपांकन दुकान से है; रूपांकन दुकान से।" तो आपका अपना मस्तिष्क कहाँ है ? आपको वस्तुओं के रूप और अपनी आवश्यकताओं की कोई सूझ–बूझ नहीं! आजकल बहुत रूपांकनकार जेल में हैं। उनके पास धन है जो उन्होंने आपको मूर्ख बनाकर ऐंठा है। अमेरिका में तो मैं हैरान थी कि वहाँ अधिकतर चीज़ें 'इटली डिज़ाइन' की बिक रही थीं। 'इटली डिज़ाइन' लिखे होने के कारण लोग उन्हें खरीद रहे थे। जो रूपांकन वे करते हैं वे सभी जगह उपलब्ध हैं, सभी जगह उपलब्ध है, सभी सुन्दर वस्तुएं। परन्तु उनका तो सामूहिक पागलपन में विश्वास है। सभी लोग एक ही डिज़ाइन के वस्त्र पहने हुए हैं।

यह सहजधर्म नहीं है। हम किसी चीज़ के गुलाम नहीं हैं। हम स्वतन्त्र लोग हैं। हमें कोई डिज़ाइन स्वीकार नहीं करना। मूर्ख लोगों को उनके पीछे भागने दो। हम सहजयोगी हैं। साधु कहलाने वाले लोगों में भी इसका प्रचलन है। वे सभी एक ही प्रकार के वस्त्र पहनते हैं। कैसे आप किसी को पहचानेगे? सहजयोग में हम आपको एक ही प्रकार के वस्त्र पहनने, एक ही जैसा दिखाई देने, एक ही प्रकार के बाल बनवाने को नहीं कहते, नहीं। आपका अपना व्यक्तित्व होना चाहिए क्योंकि आप स्वतन्त्र हैं। विवेक स्वतन्त्रता का आधार होता है। परन्तु इसका अर्थ ये नहीं है कि आप स्वच्छन्द हैं। आत्मा के प्रकाश के अभाव में व्यक्ति सभी उल्टे–सीधे कार्य करता है। आत्मा का प्रकाश प्राप्त होने पर आप प्रचलित सामूहिक पागलपन में नहीं फँसते। पागलपन में हम लोग अत्यन्त सामूहिक हैं। काश, लोग विवेकमय कार्यों में अधिक सामूहिक होते! विवेक अति महत्वपूर्ण है और यह राधा जी का आनन्दमयी गुण है। हममें आह्लाद दायिनी शक्ति का आना आवश्यक है। स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि हमसे मिलकर अन्य लोगों को प्रसन्नता प्राप्त हो।

अतः श्रीकृष्ण ने प्रेम–धर्म सिखाया। रंग–भेद आदि को यदि आप महत्व देते हैं तो इसका अर्थ यह है कि प्रेम का अभाव है। यह प्रेम दिखावा मात्र है। सफेद, काला या पीला रंग क्या है ? वास्तव में यह मेरी समझ में नहीं आता।

यहाँ पर यह अपना रंग काला करने के लिए समुद्र तट पर जाते हैं और वहाँ वे कहते है कि हमें काले लोग नहीं चाहिए। अमेरिका के लोगों में इस तरह की दूरी मैंने श्वेत एवं श्याम वर्ण के लोगों में देखी है। मैं हारलैम (Harlem) गई तो सहजयोगी पूछने लगे, "क्या आप हारलैम जाएंगी?' मैंने कहा, "क्यों नहीं?" यदि आप मुझे श्याम वर्ण का कहें तो मैं श्याम वर्ण हूँ और यदि मुझे श्वेत वर्ण का कहें तो मैं श्वेतवर्ण हूँ और यदि मुझे पीत वर्ण का कहें तो मैं पीतवर्ण हूँ। अतः वहाँ जा रही हूँ और मैंने वहाँ जाकर भाषण दिया। वहाँ पर बहुत से साधक लोग थे। वास्तव में, मैं इसे भूल नहीं सकती। वहाँ के सुप्रसिद्धतम स्थानों में से एक पर यह हॉल बना है। ऐसा ही एक हॉल आस्ट्रेलिया में भी बना है जहाँ

मैंने बहुत से साधकों के सम्मुख प्रवचन किया। मैंने सोचा इसे देखो। वे लोग कहने लगे, "श्रीमाताजी आस्ट्रेलियन लोगों ने हमारी नकल की है।" अब यह लोग अत्यंत मधुर और सुन्दर हैं। मैं उनका हृदय देख पाई, उसे महसूस कर पाई। मेरे प्रवचन के पश्चात् संचालन का प्रयत्न करने वाला व्यक्ति मेरे पास आया। उसने मुझे गले लगा लिया, चूमा। उसने तो मुझे भींच ही दिया होता। लगभग 22 साल का छोटा–सा लड़का था वह। इतना प्रेम उसने महसूस किया! कहने लगा, "श्रीमाताजी, अगली बार जब आएंगी तो आप अवश्य हारलैम आएं।" परन्तु मुझे बताया गया है कि वह सभागार बन्द हो गया है।

तो यह अमेरिकन प्रणाली किसी न किसी प्रकार से प्रजातन्त्र के विरुद्ध हैं। यह न केवल प्रजातंत्र–विरोधी है, यह अब्राहम लिंकन की इच्छाओं के विपरीत भी है। उस देश में इतना महान व्यक्ति हुआ और उसके नाम पर वहाँ केवल एक छोटी सी गली है। निःसंदेह वाशिंगटन में उनकी एक सुन्दर प्रतिमा है। परन्तु उनके सिद्धांत समाप्त हो चुके हैं। उनके विचार समाप्त हो चुके हैं। कुछ लोग आये और श्यामवर्ण लोगों के विरुद्ध लिखा, विशेषकर इंग्लैंड में। परमात्मा सृजित किसी भी चीज़ के विरुद्ध लिखने का उन्हें क्या अधिकार है। सभी लोगों के रंग यदि समान हों तो वो सेना के लोग प्रतीत होंगे। उनके भिन्न रंग–वर्ण होने आवश्यक हैं। पेड़ों और फूलों को देखें, आकाश को देखें, हमें प्रसन्न करने के लिए वे कितने रंग बिरंगे हैं ? वैचित्र्य ही हमें प्रसन्नता प्रदान करता है। वैचित्र्य ही सुन्दरता का चिह्न है। वैचित्र्य के बिना सभी कुछ उबाऊ हो जाएगा। परन्तु उन्हें इस पर गर्व है। अपने विनाश पर उतारू वे लोग स्वयं को अति–महान मानते हैं। वे स्वयं को श्रेष्ठ मानते हैं क्योंकि उनके नाक, होंठ, या बाल विशेष प्रकार के हैं। वे इतने मूर्ख हैं और आप भी उनका साथ देते हैं! किस प्रकार आप उनका साथ दे सकते हैं ? आप यदि अपनी स्वतंत्रता की कामना करते हैं तो स्वतंत्र व्यक्ति बन जाइए। स्वतंत्रता में वैचित्र्य आवश्यक है। अत्यंत आवश्यक है। मैं तो कहूँगी कि अब जो लोग अमेरिका लौट रहे हैं उन्हें नये किस्म की सहज प्रवृत्ति चाहिए। श्याम–वर्ण लोगों के पास जाइए। मैं दक्षिण अमेरिका की गोष्ठी से बहुत प्रसन्न हुई क्योंकि उन्होंने विशेषतः वहाँ के मूल–निवासियों को अपनाया था। वहाँ जा कर वे उनसे मिले। मैं भी उनसे मिली थी और हैरान थी क्योंकि तुरन्त वे कहने लगे, "श्री माताजी, हम जानते हैं कि आप आध्यात्मिक हैं। परन्तु क्या आप हमारी समस्याओं का समाधान कर सकती हैं?" मैंने पूछा, "आपकी समस्या क्या है?" "हमारी एक भूमि है। केवल 5–6 एकड़ ज़मीन, जो कि हमारी है, जहाँ तुलसीबन्धु नामक पौधे (Sage) उगते हैं। उनके अनुसार तुलसीबन्धु पवित्र पौधा है। हम उस ज़मीन को पावन मानते हैं इसलिए भिन्न उत्सवों के अवसर पर हम वहाँ एकत्र होते हैं।" उन्हें बहुत सी चीज़ों का ज्ञान है। यह पावन भूमि है और वहाँ चैतन्य लहरियों के कारण वे सदा वहाँ जाया करते थे। अत्यन्त स्वाभाविक।" तो अब वहाँ क्या हुआ ? आपकी समस्या क्या है ?" सरकार ने, इस अमेरिका की सरकार ने, यह भूमि एक भारतीय को बेच दी है।" मैंने कहा, "एक भारतीय को ?" "हाँ। आप इस व्यक्ति को यह भूमि लौटा देने को कह सकती हैं। हम उसे धन दे देंगे।" मैंने पूछा, "उस भारतीय

का नाम क्या है?" उन्होंने मुझे नाम बताया। मैंने कहा, "हे परमात्मा! वह तो सिन्धी है!" क्या वो ये भूमि आपको दे देगा ? मुझे खेद है। मैं चाहे परमेश्वरी होऊं या कुछ और, मैं कुछ नहीं कर सकती।" परन्तु मैं हैरान थी कि किसी ने भी इसके विरुद्ध आवाज़ नहीं उठाई। उन्हें इसका विरोध करना चाहिए था कि "कृपा करके हमारी भूमि लौटा दीजिए। क्यों आप इसे छीनना चाहते हैं ?"

जैसा कि सर्वविदित है, अमेरिका के सभी लोग प्रवासी नागरिक हैं। वे वहाँ के मूल–निवासी नहीं है। वे उस भूमि के स्वामी न थे। तो उन्हें किसी अन्य की भूमि को इस प्रकार रखने का अधिकार नहीं है। और साथ ही साथ स्वयं को श्रेष्ठ समझने का भी अधिकार नहीं है। यह अच्छी बात है कि कोई व्यक्ति आपके घर में घुस आये, स्वयं को श्रेष्ठ समझे और परिवार के सभी लोगों को निकाल बाहर करे! यही सब हो रहा है अमेरिका में।

सहज धर्म में इसके बिलकुल विपरीत है। ऐसे धर्म से आप लोगों को प्रेम कर सकते हैं, उन्हें अपने हृदय में बिठा सकते हैं। आपकी प्रेम एवं दयार्द्रता सदैव बहती रहती है। मेरे लिए अब ये समस्या है, मेरा शरीर मुझसे अधिक दयार्द्र है। उस शरीर को हर चीज़ का बोध हो जाता है– दूसरों की समस्याओं का भी। परन्तु मेरे विचार से आप ऐसा शरीर नहीं पा सकते, आपको ऐसा शरीर पाना भी नहीं चाहिए। परन्तु आपके पास कम से कम एक ऐसा हृदय तो होना चाहिए जो खुला हो। सड़क पर चलते हुए कोई काला व्यक्ति यदि आपको मिले तो आपका हृदय उसके लिए उमड़े! मुझे काले अमेरिकन पसन्द हैं। एक बार मैं हवाई–अड्डे पर उतरी। एक भद्र पुरुष–काले रंग का– "अरे प्रियतम! तुम यहाँ पर ? तुम्हें देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। मैं बहुत खुश हूँ। तुम कैसी हो ? एक बार यात्रा में, हुसाला मेरे साथ थी, एक लम्बे–तगड़े व्यक्ति ने मेरी ओर देखा और कहने लगा, "अरे, तुम फिर लौट आई ? हाँ! "मैंने कहा, "मैं वापिस आ गई हूँ, तुम मुझे जानते हो?" "निःसन्देह, मैं आपको जानता हूँ।" वह मुझ से कभी न मिला था। परन्तु मुझे प्रसन्नता हुई। मैं बहुत खुश हुई। लोगों से मिलने का यह सब से अच्छा तरीका है। सड़क पर जाते हुए यदि आप किसी काले रंग के व्यक्ति को देखें–मैं आपको बताती हूँ कि वहाँ जीवन भयावह है–जीवन उनके लिए नरक है। उनके लिए दुःख हुआ, मेरे आँसू बह निकले। सहज योगी के नाते आप तुरन्त उनके पास जाएं और प्रेम से उन्हें बुलाएं। "आप कैसे हैं ?" उनसे हाथ मिलाएं। वो आपका हाथ काट नहीं लेंगे। मैं नहीं जानती कि अमेरिका में अधिक अपराधी कौन है–गोरे या काले? परन्तु यदि आप दयामय हैं, प्रेममय हैं तो उनके अन्दर से यह अपराध–वृत्ति दूर कर सकते हैं; क्योंकि घृणा को केवल प्रेम से ही धोया जा सकता है। परन्तु लोग सोचते हैं कि वे बहुत चतुर हैं, चतुराई में बहुत ऊँचे हैं। अन्यथा उनमें क्या श्रेष्ठ है ? यह गोरा रंग, यह तो सबसे खराब है। विवाह से पूर्व मैं बहुत गोरी थी। फिर काली होने लगी। गोरे रंग पर हर चीज़ का प्रभाव पड़ता है। रोशनी जो आप मेरे चेहरे पर डालते हैं, उससे मेरे चेहरे पर दाग पड़ जाते हैं। तो मेरी समझ में नहीं आता कि गौर वर्ण होने में क्या महानता है ? यह तो अजीब पीला सा और आनन्दविहीन प्रतीत होता है। लोग अपने शरीर को पक्के रंग का बनाने के लिए समुद्रतट पर जाते

हैं और चर्म–कैन्सर का कष्ट भोगते हैं। इस प्रकार की मूर्खता का भी बहुत फैशन है। अब हमें सावधान रहना है कि सामूहिकता में हम कितना इन चीज़ों से प्रभावित होते हैं।

मैंने अपनी नातिन को बिना बाजू के वस्त्र पहने देखा और उसे बताया कि "बेटे आपको बिना बाजू के कपड़े नहीं पहनने चाहिएं।" वह कहने लगी, "बहुत गर्मी है। मुझे बहुत गर्मी लग रही है।" वह कम उम्र की है। मैंने उसे बताया कि देखो, "ये दो बहुत महत्वपूर्ण चक्र हैं। इनको नंगा रखने से तुम्हें समस्या हो सकती है।" घुटनों से ऊपर के वस्त्र पहनना उसे पसन्द नहीं है, फिर भी, वह कहने लगी कि "लोग तो घुटने से भी ऊपर वस्त्र पहनते हैं।" मैंने कहा, "घुटनों पर अति महत्वपूर्ण चक्र है। हमें इन्हें ढक कर रखना चाहिए। यदि ये प्रभावित हो गए तो तुम्हें घुटनों के रोग हो जाएंगे।" वह तुरन्त परिवर्तित हो गई, तुरन्त। "माँ मैं अन्दर एक ब्लाउज़ पहनूंगी और उसके ऊपर कुछ और।" क्योंकि वह समझ गई कि ये हमारा प्राकृतिक आदि–वर्जन है कि हम इन दोनों चक्रों को नंगा न छोड़ें। पर आजकल जितनी लम्बी टांगे हैं उतने छोटे वस्त्र हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि टांगो में क्या है। सारा सौन्दर्य क्या टांगो में ही है ? यात्रा में मैं एक महिला से मिली। मुस्लिम होने के कारण वह बुर्का पहनी थी। जब हम लन्दन उतरे तो बुर्के का स्थान घुटनों से ऊपर के वस्त्रों ने ले लिया था। मैंने कहा, "ये कैसी मुस्लिम महिला है ?" ये ईसाइयों से भी गई–बीती है, क्योंकि ऐसे वस्त्र तो वो भी न पहनेंगी। जहाज़ से उतरने के लिए आपको सीढ़ियाँ उतरनी पड़ती हैं। लज्जा, शर्म कुछ भी नहीं। बेशर्मी।

तो सहज धर्म के अनुसार आपमें शर्म होनी चाहिए। आपमें लज्जा–विवेक होना चाहिए। सहज धर्म में आप दूसरों से जो भी बातचीत करते हैं, उनसे जो कहते हैं, जो भी आचरण करते हैं, वह आह्लाददायी होना चाहिए। कोई बात यदि आह्लाददायी नहीं है तो चुप रहिए। कुछ मत कहिए, क्या आवश्यकता है? इतना व्यंग्यमय होने की और व्यंग्य द्वारा मस्तिष्क प्रदर्शन का क्या लाभ है? तीखेपन से, व्यंग्यात्मक शैली में बात करना अच्छी नस्ल का चिह्न नहीं है। आप यदि मधुरता पूर्वक बात करें तो हानि क्या है? यह मधुरता राधाजी की देन है। अब तो, निःसंदेह लोगों ने उनका दुरुपयोग किया है। उन्हें रोमियो–जूलियट सम बना दिया है। वास्तविकता यह नहीं है। वे अत्यन्त पावन महिला थीं महालक्ष्मी थी वे। तो सहज में आकर महालक्ष्मी बनने के लिए आपको बहुत ही गरिमामय वस्त्र पहनने चाहिएं। मुझे याद है, एक बार, एक पार्टी में एक व्यक्ति मेरे पास आ कर बैठ गया। "हाँ!" मैंने कहा, "क्या हुआ?" "कितना सुकून है माँ! कितना सुकून है श्रीमती श्रीवास्तव आपको देखकर! उन स्त्रियों की ओर देखो। मैं तंग आ गया हूँ" परन्तु आपके आने से मुझे कितना चैन मिला है!" मैंने कहा, "क्या चैन मिला है?" "आप इतनी शांत हैं!" तो सहज धर्म में महिलाओं को शान्त होना चाहिए। सहज महिलाएं इतनी मूर्ख एवं उथली नहीं होती कि हर चीज़ पर हँसती रहें। यह महिलाओं का तरीका नहीं है कि हर चीज़ की खिल्ली उड़ायें। कोई बात यदि हँसने योग्य है तो ठीक है। परन्तु हँसने योग्य बात न हो तो भी वो हँसेंगी! ये कोई तरीका नहीं है। ऐसा करना तो मूर्खता हो सकती है। परन्तु सराहना एवं

आनन्द की हँसी तो इतनी पावन होती है कि अत्यंत सुन्दर वातावरण की सृष्टि करती है।

मेरे विचार से पर्यावरण की सारी समस्या हमारे मस्तिष्क एवं लालन–पालन में है। यह बाह्य नहीं। यह हमारे अंदर है जो बाहर प्रतिबिम्बित होती है। गणेश पूजा में मैं आपको बताऊँगी कि पृथ्वी माँ से हमारा कितना निकट सम्बन्ध है और हमारे आचरण तथा जीवन शैली के प्रति किस प्रकार वह प्रतिक्रिया करती है। मैं जानती हूँ कि सहज योग में आप लालच और वासना सहज ही में त्याग देते हैं। लोभ और काम का त्याग यदि आप नहीं कर सकते तो आपको स्वयं को सहज योगी नहीं कहना चाहिए। काम और लोभ का त्याग पहला कार्य है। युवा लोगों में अब मुझे लगता है कि वे स्वतंत्र होकर सहज योग में आते हैं। वे महिलाओं के पीछे नहीं दौड़ते, न महिलाएं उनके पीछे दौड़ती हैं। वे साथ बैठते हैं, बातें करते हैं, हँसते हैं परन्तु सभी कुछ पावन है। कुरान में स्पष्ट वर्णन है कि कयामा के वक्त सुन्दर पुरुष एवं महिलाएं होंगी परन्तु उनमें वासना और लालच न होगा। वे पवित्र होंगे। आज आप देख सकते हैं कि लालच और वासना समाप्त हो गये हैं। स्वतः ही ये समाप्त हो गये हैं और आप देख सकते हैं कि अब आप इस बन्धन से मुक्त हैं।

कल हमारे यहाँ विवाह होने वाले हैं।

सहज धर्म में क्षमा पहली आवश्यक चीज़ है। जो क्षमा नहीं कर सकता वह सहज योगी नहीं हो सकता। क्षमा :– किस प्रकार क्षमा आती है ? भूतकाल को भूल जाने से यह आती है। नहीं तो आप कहते ही रहेंगे कि अमुक व्यक्ति ने मुझे सताया। मेरे लिए वह बहुत तुच्छ था। ऐसा था। उसने मेरे साथ ऐसा किया। ऐसा कहना ये दर्शाता है कि आप में सहज योग समझने की योग्यता नहीं है। क्योंकि आप क्षमा नहीं कर सकते। याद रखने वाली कौन सी चीज़ है। वर्तमान ही सर्वोत्तम है। अब मेरे साथ बैठकर आह्लाददायिनी शक्ति का आनन्द लेते हुए भी यदि आप बीती बातें सोच रहे हैं तो आपमें उस योग्यता का अभाव है। सहज योग की योग्यता पाने के लिए आपको अपने भूतकाल से मुक्त होना होगा। समाप्त। अपराध स्वीकार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं जानती हूँ कि बहुत से लोग सहज योग में आने के बाद अपराध स्वीकार करते हुए मुझे पत्र लिखते हैं। मैं कह देती हूँ, इन पत्रों को जला दो।" मैं याद नहीं रखती। इसके विषय में मैं कुछ नहीं पढ़ती। अतः क्षमा होनी चाहिए। क्षमा यदि है तो, आप हैरान होंगे, आप भार–विमुक्त हो जाएंगे और आपका विवाहित जीवन खुशियों से भर जाएगा। और यदि आप पुरानी बातों को याद रखते हैं ....। कुछ विवाह वास्तव में बहुत जटिल होते हैं। तो आप इनसे मुक्त हो जाएं। सहजयोग में तलाक की आज्ञा है, यदि कोई उचित कारण हो तो। किसी अधिक अच्छी चीज़ के लिए नहीं। कुछ देशों के लड़कों और कुछ की लड़कियों के विवाह हमने वर्जित कर दिए हैं। क्या कारण है? अनुभव से हमने सीखा है कि वे विवाह योग्य तत्व नहीं है। अब अच्छा होगा कि विवाह न करें और यदि करें तो आदर्श सहज योगी की तरह करें। आप यदि सहज योगिनी हैं तो सदैव क्षमा करते हुए आप अधिक अच्छी तरह चल सकती हैं। लोग मुझे कहते हैं "श्री माताजी, हमारी सहायता कीजिए। क्यों ?" "क्योंकि मेरे पति मुझे पैसा नहीं देते।" मैं कहती हूँ, "उसे छोड़ दो, मैं बुरा नहीं मानूंगी।" उसे

चाहिए कि तुम्हें पैसा दे। क्यों वे तुम्हें पैसा नहीं देता? उसके पति से बात करने पर पता चलता है, "श्री माताजी वह बहुत फिजूल खर्च है।" मैंने कहा, "बेहतर होगा कि आप दोनों सहजयोग छोड़ दो और जो मर्ज़ी करो।" सहज धर्म में पति–पत्नि सम्बन्ध वास्तव में रोमांचक तथा सुन्दर होने चाहिएं। यहाँ हम प्रेम की बातें नहीं करते। यहाँ शायद ही कोई एक आध प्रेमपाश में बंध कर चल सका हो! यदि आप में प्रेम भावना हो तो विवाह वरदान है। परन्तु प्रायः प्रेम विवाह अभिशाप बन जाते हैं। तो विवाह पश्चात् प्रेम में बन्ध जाना तो अच्छा है परन्तु इसका अर्थ ये नहीं कि आप भूल जायें कि आप सहजयोगी हैं। इस मामले में आपके विवाहित जीवन में सहज योग बहुत सहायता करता है। सहज धर्म आपके बच्चों के लिए है–कि बिना कष्ट दिए उनका पालन–पोषण करने आप उन्हें स्वतंत्र व्यक्ति बना सकें। उन्हें अपनी बुद्धि का उपयोग करने दें। कई बार भटक कर बच्चे गलत कार्य करने लगते हैं; ऐसी स्थिति में आप उन्हें सुधारें। उन्हें बताना आपका कर्तव्य है। वे पेड़ों से नहीं पैदा हुए, माँ–बाप से जन्में हैं। अतः गलतियों के विषय में उन्हें आगाह करना माता–पिता का कर्तव्य हैं। परन्तु यह कार्य आपने सहज ढंग से करना है। मैं आपको एक उदाहरण दूँगी। एक साधक मेरे पास आया और कहने लगा, "श्री माताजी, धूम्रपान के बिना मैं नहीं चल सकता, मुझे धूम्रपान करना ही होगा। "मैंने कहा, "ठीक है तुम धूम्रपान करो, परन्तु तब तुम सहजयोगी नहीं हो सकते। मैं भी यदि ऐसे ही धूम्रपान करने लगूं तो कैसे लगूंगी?" "भयानक।" 'आप यदि मेरे बेटे हैं तो आप सिगरेट नहीं पी सकते।" उसने सिगरेट छोड़ दी। क्या आप सोच सकते हैं? तो बच्चों से व्यवहार करते हुए स्वयं को उदाहरण बनाएं, स्वयं को उस उदाहरण का अंग बनाएं, ताकि बच्चों को बुरा न लगे।

मैं इस विषय पर बहुत बार बता चुकी हूँ। बच्चे कुछ भी त्याग सकते हैं, आपका प्रेम नहीं छोड़ सकते। यदि वे जान जाएं कि आप उनसे प्रेम करते हैं तो वे ऐसा कुछ भी स्वीकार न करेंगे जो उन्हें आपके प्रेम से वंचित कर दे। यह निश्चित है। प्रेम के विषय में बच्चे सबसे अधिक जानते हैं। अंग्रेजी भाषा में बच्चों के विषय में लिखी गई सुन्दर–सुन्दर पुस्तकों का मैंने अभाव पाया है। मैं जब लन्दन में थी तो एक पुस्तक छपी थी जिसमें बच्चे राजनीतिज्ञों के विषय में बात करते हैं। इसकी 5000 प्रतियां छपवाई गईं जो एक ही दिन में बिक गईं। अतः बच्चों से बातचीत करें, आप हैरान होंगे कि वे माधुर्य से परिपूर्ण हैं। उनके पास बहुत अच्छी बातें हैं, किस प्रकार सहज की बात करते हैं और किस प्रकार अपनी आध्यात्मिक शक्ति की अभिव्यक्ति वे करते हैं ? अब हमारे यहाँ बहुत से अच्छे बच्चे हैं जो पूरे सहज हैं। एक बच्चा आया और साष्टांग मेरे सामने लेट गया। मैंने पूछा, "तुमने ऐसा क्यों किया?" "श्री माताजी मुझे आपसे शीतल लहरियाँ आ रहीं थी इसलिए मैंने ऐसा किया।" "क्या आपको यह अच्छा लगता है?" "निःसन्देह।" "चाकलेट से भी अधिक?" "निःसन्देह।" "क्या आप उन्हें खाते हैं?" "इसकी आवश्यकता नहीं हैं।" "अन्दर से इतनी प्रसन्नता मिलती है, और श्री माताजी मुझे तो ऐसा लगता है मानों आप मेरे हृदय पर हाथ रखकर मुझे सान्त्वना देने का प्रयत्न करती हैं।" मैं हैरान थी। मैंने कहा, "आपका हृदय कहाँ है ?" "यहाँ! मेरा हृदय यहाँ है, मै इसे यहाँ

महसूस करता हूँ।" आप कल्पना कीजिए कि सहजयोग का कितना प्रेम एवं सूझबूझ पाँच साल से भी इन छोटे बच्चों में हैं! अब आप सब मेरे विकसित बच्चे हैं। आपके अन्तर्निहित सारे सौन्दर्य को, जिसका आनन्द आपने लेना है, मैं जानना चाहती हूँ। सर्वप्रथम स्वयं पर हँसना सीखें। आनन्द लेने का यह सर्वोत्तम तरीका है। शीशे के सामने अधिक समय मत बर्बाद करें। आप यदि ऐसा करते हैं तो अवश्य आपमें कोई बाधा है। व्यक्तिगत रूप से मैं यह सोचती हूँ कि यह एक प्रकार का उन्माद (Passion) है। अपने अन्दर देखें :क्या आप सहजधर्मी हैं ? श्री माताजी ने सहज धर्म को श्रीकृष्ण से भी अधिक प्रस्थापित किया है। उन्होंने प्रेमधर्म स्थापित करना चाहा था जो हममें है। इसके अतिरिक्त भी हमारे बहुत से सुन्दर पहलू हैं और हमारे व्यक्तित्व में बहुत सी सुन्दर खूबियाँ है। परन्तु हम इसका आनन्द लेना भूल गए हैं। अतः चित्त आपके अपने गुणों से परे, आपके अपने व्यक्तित्व पर होना चाहिए। तब आप हैरान होंगे कि आपका व्यक्तित्व किस प्रकार आपको आनन्द, आह्लाद और अन्य लोगों के प्रति कितना धैर्य प्रदान कर रहा है। कभी–कभी मुझे यह सब कुछ एक मज़ाक–सा प्रतीत होता है क्योंकि इसमें कुछ भी गम्भीर नहीं है। यह श्रीराम जैसा नहीं है कि आपको गम्भीर होना पड़े। मुझे किसी का वध नहीं करना। इस जीवन में मुझे कोई शस्त्र नहीं उठाना। बिना शस्त्रों के यदि समस्याओं का समाधान होता है तो आप क्या करेंगे ? परन्तु सहजयोगियों का सौन्दर्य देखने का प्रयत्न आप अवश्य करें।

संवेदनशील होकर आप देखें कि किस प्रकार आपकी सहायता हुई है, किस प्रकार आपका मार्गदर्शन हुआ है और किस प्रकार आपको आशीर्वाद मिले हैं। यह सहज धर्म है। अब यदि यह नहीं जान सकते तो आप अत्यन्त निम्न स्तर पर रहते हैं। इसमें सहजयोग का कोई दोष नहीं है। यह आपकी अपनी शैली है। आप संवेदनशील नहीं हैं। मान लो कोई अपने हाथ जला ले तो आप क्या करेंगे ? उसमें विवेक का अभाव है, संवेदनशीलता नहीं है, वह महसूस नहीं कर सकता, शराब पी सकता है, सिगरेट पी सकता है, सभी कुछ कर सकता है और फिर भी ठीकठाक है। अवश्य ही वह कोई राक्षस होगा। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या करूं। तो हमें अच्छे सहजयोगियों के उदाहरण लेने चाहिए, बुरों के नहीं। और देखना चाहिए कि आनन्द में हम किस प्रकार बह रहे हैं। आनन्द एक सागर है। उदाहरणार्थ अब मैं आई तो हर व्यक्ति मुझे फैक्स करने का प्रयत्न कर रहा था। पश्चिम में एक अन्य समस्या यह है कि वहाँ सभी लोग गुफा की तरह से बन्द कमरों तथा गुफा की तरह की कारों में ही रहना चाहते हैं। सूखे से उन्हें बहुत डर लगता है। मैं नहीं जानती कि क्या उन्हें बाहर फैंक दिया जाएगा, उनका क्या होगा वे खुश्क नहीं होना चाहते। यह सूखा किसी हिम नदी से नहीं आ रहा है। उन्हें ताजी हवा में विश्वास नहीं है और यह एक अन्य कारण है कि कभी कभी लोग दमघोटू होते हैं। वे केवल दमघोटते हैं। जीवन का दमघोटना उनकी आदत होती है। एक बार मैं भारत में थी। बहुत गर्मी थी। कोई पश्चिमी व्यक्ति मेरी गाड़ी चला रहा था। कहने लगा, "खिड़की मत खोलिए, मत खोलिए।" मैंन कहा, "क्यों?" "खुश्की है।" मैंने कहा, "इस देश में लोग खुले में रहते हैं, खुश्की क्या है ? आप कौन–सी खुश्की की बात कर रहे

हैं। आप दरवाज़ा नहीं खोल सकते, खिड़की नहीं खोल सकते, कुछ भी नहीं खोल सकते।" यदि आप कुछ खोल देंगे तो वे मर जाएगें। उनका जो रवैया प्रकृति के प्रति है वही निजी जीवन में है। वे कुछ भी नहीं खोलना चाहते। कोई यदि उनके घर पर आ जाए तो वे कहेंगे, "हे परमात्मा! अब हमें मदिरा और भोजन बाँट कर लेने होंगे।;; वे बाँट कर नहीं खा सकते। यह अत्यन्त असामूहिक है। परन्तु भारत के लोगों में बाँट कर खाने का अच्छा क्षेम है क्योंकि वे अभी तक आदिमानव हैं। वे अभी आदिवासी हैं। उल्टे सीधे ढंग से अपने अहं को सन्तुष्ट अभी तक वे नहीं करने लगे। जैसा भी हो, भारत के लोग बाँट कर खाना पसंद करते हैं। किसी भारतीय को यदि आपने प्रसन्न करना हो तो उसे कहें, "कल मैं खाना आपके साथ खाऊँगा।" उसकी पत्नी उछलकर कहेगी, "आपको क्या पसन्द है?" "मुझे बताएं कि आपको क्या अच्छा लगता है?" वह उछल पड़ेगी। परन्तु प्रायः क्या होता है? यहाँ पर यदि आप कहें कि, "वह खाना खाने के लिए आ रहा है" तो आपकी पत्नी कहती है, "नहीं! मैं अपनी माँ के यहाँ जा रही हूँ।" तुरन्त वह कार्यक्रम बना लेगी। मैं तो यह बात समझ भी नहीं पाती। उनके पास बहुत सुन्दर, साफ–सुथरे घर हैं। परन्तु यदि कोई आ जाए तो उन्हें ऐसा आघात लगता है मानो बिजली का झटका लगा हो। किसके लिए यह सभी कुछ है। दिखावा करने के लिए वे लोग बैंकों से पैसा उधार लेंगे। अमेरिका में बसे भारतीय भी यही करते हैं। वे तीन मर्सिडीज कारें और चार घर लेना चाहते हैं। किसलिए ? बस पैसा ही उधार लेते रहते हैं। सहजयोगियों को पैसा उधार नहीं लेना चाहिए। उसकी कोई आवश्यकता नहीं है। इन चीज़ों के बिना आप काम चला सकते हैं। इतनी कारें लेने की क्या आवश्यकता है? आजकल लोग पैदल तो चलना ही नहीं चाहते। बचपन में जब हम पाठशाला जाते थे तो पैदल जाना पड़ता था, यद्यपि मेरे पिता जी के पास कार थी। एक पहाड़ी पार करके हमें जाना होता था। लगभग 5 मील दूर थी पाठशाला। हर सुबह हमें पैदल जाना होता था, शाम को हमें लाने के लिए कार आती थी। मैं तो नंगे पाँव चला करती थी। इतनी चैतन्य लहरियाँ होती थीं कि मुझे लगता कि चप्पलों के कारण उनमें कमी आ रही है। अतः अपनी चप्पलों को मैं हाथ में उठा कर चलती थी। एक बार हमारा एक नया ड्राइवर आया। उसने कहा, "मैं कैसे आपकी बेटी को पहचानूंगा ?" मेरे पिताजी ने कहा, "जो लड़की हाथों में चप्पल उठाए हुए हो उसे आपने लाना है।" तो अपनी श्रेष्ठता, अपनी उदारता का आनन्द लेना है। यह अत्यन्त आवश्यक है। किसी का पक्ष नहीं लेना। आपका उनसे तादात्म्य नहीं है। मेरे विचार से अब अच्छा है। जब से आपने सहज धर्म अपनाया है, अंग्रेज बताते हैं कि अंग्रेजों में क्या कमी है, स्विस अपनी कमियाँ बताते हैं और भारतीय अपनी। वास्तव में मैं उनसे सीखती हूँ। मुझे तो पता भी नहीं कि उनमें ये चीज़ें हैं। रूसी अपने दुर्गुण बताएंगे और देखने लगेंगे कि इस मामले में हम क्यों पिछड़े हुए हैं। जैसे भारत में हम देखते हैं कि यहाँ क्या हो रहा है। सभी लोग भ्रष्ट हैं, भयानक! मैंने कहा, "ठीक है, यदि आपको भारत पसन्द नहीं है तो आप कहीं और क्यों नहीं चले जाते ?" "नहीं, नहीं, नहीं , हम रहेंगे तो यहीं परन्तु यहाँ की सरकार अतिभ्रष्ट है।" कहीं भी आप जाएं, सहज–धर्मी तुरन्त अपनी कमियों को देख लेंगे। उन्हें अपने देश को परिवर्तित करने

के लिए चुना गया है। भारत के बहुत से प्रश्न मैंने उठाए हैं। उस स्तर पर मैं कार्य शुरु करने वाली हूँ। एक प्रकार से हमने बेसहारा महिलाओं के लिए कार्य आरम्भ कर दिया है। इसके पश्चात् गरीबी तथा अन्य समस्याओं को लेंगे। मात्र कहने भर से कि 'गरीबी दूर करो,' गरीबी दूर नहीं की जा सकती। गरीबों के लिए आपके हृदय में भावना होनी आवश्यक है। केवल तभी आप कुछ कर पायेंगे। परन्तु भारतीय होने के नाते केवल भारतीयों के प्रति आपमें वे भाव आते हैं। यदि आप सहज–धर्मी हैं तो सभी के लिए यह गहन भावना आपके हृदय में आती है। अतः हमने एक नये धर्म की स्थापना की है और इस नये धर्म से यह विश्व एक कहीं श्रेष्ठ नयी नस्ल (प्रजाति) बन गया है। श्रीकृष्ण का स्वप्न भी साकार हो रहा है। वह आरम्भ में ही वर्णन करते हैं– मेरे विचार में श्रीकृष्ण अच्छे विक्रेता न थे, क्योंकि उन्होंने सर्वोत्तम का वर्णन सर्वप्रथम किया है। एक विक्रेता 2 रुपयें की चीज़ से शुरु करके 2000 तक ले जाता है। परन्तु श्रीकृष्ण ने शुरु में ही कह दिया कि आपको 'स्थित प्रज्ञ' बनना होगा अर्थात् सहज योगी। जब अर्जुन ने पूछा कि 'स्थित प्रज्ञ क्या है" तो उन्होंने सहजयोगी के गुण बताए। यह पहले से ही गीता के दूसरे अध्याय में वर्णित है।

अर्जुन महान जिज्ञासु थे। उन्होंने बहुत से प्रश्न किए। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बताया कि यह सब केवल माया है– केवल भ्रम है। माया जाल से मुक्ति पा लो। क्योंकि अर्जुन ने कहा कि "ये सब मेरे सम्बन्धी हैं, गुरु हैं। मैं कैसे इनका वध कर सकता हूँ ?" श्रीकृष्ण ने कहा, "किसी का वध नहीं होता।" इनका वध इसलिए हो रहा है क्योंकि ये सत्यधर्म का पालन नहीं करते। जो सत्यधर्म का पालन नहीं करते। जो सत्यधर्म का पालन नहीं करते वो कैसे तुम्हारे भाई–बहन हो सकते हैं ? आपका इनसे कुछ नहीं लेना–देना। आप यदि उनका मार्गदर्शन कर सकते हैं, उन्हें सुधार सकते हैं तो ठीक है। नहीं तो उन्हें भूल जाओ। पहले सीधे–सादे लोगों से सम्बन्ध रखो। पहले हमें सीधे –सादे निश्छल लोगों से व्यवहार करना चाहिए और क्षेम प्राप्त हो जाने पर कठिन लोगों की ओर बढ़ना चाहिए। अन्यथा यहाँ आकर आप कहेंगे, "श्री माताजी मुझे यह पकड़ आ गई, मुझे वह पकड़ आ गई।" तो आत्मा होने के नाते, सहजधर्म में आप अन्य लोगों के विषय में अच्छी तरह जानते हैं और समझ सकते हैं कि कौन कैसा है तथा उसके कौन से चक्र पकड़ रहे हैं। परन्तु अमेरिका में मैंने पाया कि सहजयोगी जाकर किसी से भी कह देते हैं कि " आपका फलां चक्र पकड़ रहा है। " कोई पहली बार आया है और आप उसे कह देते हैं कि, "तुम अहंकारी हो।" वह कहेगा, "आप कैसे जानते हैं ?" तुम्हारी आज्ञा पकड़ रही है। हो सकता है बताने वाले की स्वयं की आज्ञा पकड़ रही हो! किसी नए आदमी का स्वागत करने का क्या यही तरीका है ? वास्तव में आपको यह कहना चाहिए कि, "आइये, बैठिए। बहुत अच्छा। आप अति महान हैं।" वे लोग क्योंकि अभी तक अन्धकार में हैं अतः उन्हें थोड़ी सी मक्खनबाज़ी अच्छी लगती है। आप यह सब उसे सहजयोगी बनाने के लिए कर रहे हैं। आप उसे प्रेम करते हैं और यही मूलकारण है। परन्तु किसी व्यक्ति के पहली बार आते ही यदि आप उसे कहें कि आप में यह कमी है, आपमें वह कमी है तो उचित न होगा। यह पादरी का कार्य नहीं है कि

आप लोगों को उनकी कमियाँ ही बताते चले जाऐं और कहें कि जाकर अपराध स्वीकार करें। ऐसा नहीं है। हमें तो यह दर्शाना होगा कि हमे उस व्यक्ति से प्रेम हो गया है। आपका व्यवहार उसके प्रति इसलिए अच्छा है क्योंकि आपको वह अच्छा लगता है। परन्तु ज्योंही कोई आपके पास आता है और आप उसे आघात पहुँचाते हैं तो बस सब समाप्त हो गया। किसी प्रकार आप सम्बन्धों को अच्छा बनाए रख सकते हैं ? अमेरिका के लोगों को यह चीज़ सीखनी है। मैं नहीं समझ पाती कि किस कारण से अमेरिका के लोग स्वयं को अन्य लोगों की अपेक्षा श्रेष्ठ मानते हैं। विवेक मुझे यह कहने की आज्ञा नहीं देता कि वह अन्य लोगों को एकदम गलत समझ लेते हैं। दूसरों के विषय में निर्णय करने लग पड़ने से आप सहजधर्म का पालन नहीं कर सकते। सहजधर्म तो यह है कि आप स्वयं में स्थित हैं: स्वयं में स्थित आप अपने साम्राज्य में हैं, अपनी प्रसन्नता में हैं और अपने आनन्द में हैं। अन्य लोगों की आलोचना करने का समय कहाँ है ? तो सभी के प्रति अपना प्रचुर प्रेम दर्शाना ही सर्वोत्तम है। उस प्रेम में भी आपने दया का प्रदर्शन न करके शुद्ध प्रेम दर्शाना है जो कि आह्लाददायी है। श्रीकृष्ण का यही संदेश है परन्तु मैं नहीं जानती कि कितने लोग इसे समझ पाए। अब, तथाकथित, श्रीकृष्ण के अनुयायी जैसे हरे रामा के लोग तो वास्तव में गलियों के भिखारी हैं। वे स्वयं तो कुबेर हैं परन्तु उनके अनुयायी गलियों के भिखारी हैं। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं, क्या इससे कुबेर की गरिमा बढ़ती है ?

तो सहजयोगी ऐसे नहीं हैं। सहजयोगियों को उदार होना चाहिए, हर समय न तो अपनी चिन्ता करनी चाहिए और न ही अपने की विषय में सोचते रहना चाहिए। उन्हें तो योगियों की सामूहिकता के विषय में सोचना चाहिए। सामूहिकता लोगों को विवश करके लोगों को सहजयोग में लाने के लिए नहीं होती। एक बार जब वे सहज में आ जाएंगे तो उन्हें जीवन के आनन्द के विषय में पता चल जाएगा और फिर आपको उन्हें कुछ बताना न पड़ेगा। कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं है। चुपचाप बैठकर उनपर कार्य करें और वे आपका प्रेम महसूस करने लगेंगे। प्रेम इतना महान है। यह न केवल अन्य लोगों की सहायता करता है, यह आपकी भी सहायता करता है। दूसरों को आत्मसाक्षात्कार देना बड़ा आनन्ददायी बात है। परन्तु यदि आपने यही कहना था कि, "आपका फलां चक्र पकड़ रहा है, "तो आपने साक्षात्कार दिया ही क्यों। आपको यदि आत्मसाक्षात्कार देना नहीं आता तो अच्छा होगा कि आप साक्षात्कार न दें। तो आलोचना से हम जीवन का आनन्द नहीं ले सकते। निःसन्देह कभी कभी विनोद के लिए आप एक दूसरे की टांगे खींच सकते हैं। दूसरों को कष्ट या हानि पहुँचाने के लिए नहीं और न ही उनका पतन करने के लिए। हम सब सहज धर्मी हैं, आपने सहज धर्म स्वीकार किया है और सहज धर्म में हमें हार्दिक प्रेम एवं विवेकशील जीवन अपनाना होगा, मिथ्याचार या आडम्बर नहीं। अब यह पोप गर्भपात के विरुद्ध है। मैं नहीं हूँ। एक महिला यदि कष्ट उठा रही है तो उसे गर्भपात की आज्ञा होनी चाहिए। उत्पन्न होनेवाले की अपेक्षा जीवित व्यक्ति अधिक महत्वपूर्ण है। कोई महिला यदि गर्भपात कराना चाहती है तो वह बच्चा तो पुनः जन्म ले लेगा। हमारे अनुसार कोई स्थायी रूप से मरता नहीं चाहे जो मर्जी हो। इस प्रकार से वे

मानव सन्तान वृद्धि को बढ़ावा देते हैं। मुसलमान लोग कहते हैं कि उनकी महिलाएं सन्तान पैदा करने के कारखाने हैं। वे अधिक से अधिक बच्चे बनाए चले जाते हैं ताकि बहुत से वोट देनेवाले लोग हों। पोप भी इस बात को जानता है इसी कारण वो गर्भपात की आज्ञा नहीं देता। उसके अनुसार ईसाई लोगों को गर्भपात नहीं कराना चाहिए नहीं तो मुसलमानों से मुकाबला करने के लिए ईसाईयों की संख्या कम हो जाएगी। परन्तु सहजयोग में इस प्रकार की मूर्खतापूर्ण, रूढ़िवादी एवं हास्यास्पद चीज़ें नहीं हैं। हम तलाक की आज्ञा भी देते हैं और गर्भपात की भी क्योंकि यह भी आवश्यक है। यह समझना चाहिए कि यह सब वर्णन विद्यमान हैं परन्तु यह उनके लिए नहीं हैं जिन्हें कष्टों से छुटकारा पाना है। इसके लिए हमें कार्य करना होगा तभी यह कार्यान्वित हो सकेगा। परन्तु सच्चाई तो यह है कि हमें गर्भपात की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। परम चैतन्य सभी कार्य कर देता है। मेरे सभी कार्य परम चैतन्य करता है, मुझे कुछ करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। **परम चैतन्य सभी कुछ करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि क्या करना है और कैसे करना है। कभी कभी आप कठिनाई में होते हैं, फिर भी समस्याओं को परमचैतन्य पर नहीं छोड़ते। यदि आप परम चैतन्य पर छोड़ दें तो कार्य बहुत अच्छी तरह से हो जाएगें।** तो सहज योग को समझने के लिए पहली और अत्यंत आवश्यक बात यह है कि आप कितने आनन्दमग्न हैं। इसके लिए आपके पास संगीत आदि बहुत सी चीज़ें हैं।

मैं कह रही थी कि आज मैं अधिक नहीं बोलूंगी, परन्तु जो भी है श्रीकृष्ण के साथ आप चुप नहीं रह सकते। उन्होंने मुरली बजाई। उनकी ओर देखो। मैं तो आपसे बात कर रही हूँ ,परन्तु उन्होंने केवल बाँसुरी बजाई। गीता के सिवाय श्रीकृष्ण ने बहुत बातें नहीं की और गीता को पढ़नेवाले लोग भी बहुत अजीब हैं। गीता को पढ़नेवाले यह नहीं समझ पाते कि श्रीकृष्ण का धर्म क्या है? यदि वे श्रीकृष्ण को नहीं समझ पाएंगे तो किस प्रकार वे सहजयोग को समझ पाएंगे ? तो आप सभी ने प्रेम , क्षमा, दूसरों की सराहना तथा उन्हें आनन्द प्रदान करने का अभ्यास करना है। कुछ सहजयोगी मेरे प्रति अत्यन्त विनम्र थे।

एक बार मैं अपने लिए साड़ी खरीदने के लिए एक दुकान पर गई। मेरे हिसाब से साड़ी बहुत मंहगी थी अतः इसे मैंने नहीं खरीदा। यह रंग मुझ पर फबता है, परन्तु कोई बात नहीं। मेरे पास इतने पैसे नहीं है। एक सहजयोगी ने (ग्रेगोर) वह साड़ी खरीदी और मेरे जन्मदिवस पर मुझे भेंट की। मेरी आँखों में आँसू भर गए और उस समय मैं उस साड़ी को देख न सकी। इतनी छोटी सी चीज़ । प्रायः अपने लिए मैं आपसे किसी चीज़ की आशा नहीं करती। नहीं। परन्तु छोटी छोटी चीज़ें मुझे बहुत प्रसन्न करती हैं। किसी अन्य के प्रति यदि आप ऐसा करेंगे तो हो सकता है कि वह न तो इसे समझ सके और न ही महसूस कर सके। परन्तु सहजयोगी इसे अवश्य महसूस करेगा।

यह सबकुछ जो मैंने कहा इसके लिए आपका अत्यन्त धन्यवाद। स्वानन्द लेने का और दूसरों को आनन्द प्रदान करने का प्रयत्न करें।

परमात्मा आपको धन्य करें।

(अनुवादित)

रूसी लोक चिकित्सा सम्मेलन

(नोटः यह वार्ता सितम्बर 1997 में हुए रूसी चिकित्सा सम्मेलन के अवसर पर पढ़ने के लिए श्री माताजी ने लिखी थी)

मान्यवर सम्माननीय अतिथिगण!

मुझे सहज योग और इसकी कार्यशैली के विषय में बोलने की आज्ञा दें। सहजयोग समस्याओं की जड़ों का इलाज करता है केवल पेड़ के पत्तों का नहीं। हर मानव के अन्दर स्थित आदि ऊर्जा जागृत करके यह इस कार्य को करता है, तत्पश्चात् यह ऊर्जा स्वतः ही मानव अन्तःस्थित केन्द्रों या चक्रों को ठीक करती है। इस ऊर्जा का अपना विवेक है और अपनी करुणा है तथा यह आपसे भी अधिक आपके विषय में जानती है कि आपमें क्या कमी है।

यह मानव अन्तर्रचित आदि तत्वों को तथा आदिवर्जनों के अन्तर्जात तत्वों को पुनः स्थापित करती है और यह वर्जन व्यक्ति को सच्चा अन्तर्जात चरित्र, स्वास्थ्य एवं आन्तरिक शान्ति प्रदान करते हैं। इस ऊर्जा की शक्ति, वास्तव में, उन आदि और सच्चे तत्वों से बनी है जो शाश्वत हैं और अपरिवर्तनशील भी।

तो आइये जनसाधारण की धारणा, जिस प्रकार लोकचिकित्सा में हैं, पर विचार करें। पीढ़ी दर पीढ़ी जनसाधारण द्वारा किए तथा लिखे गए अनुभवों से बनी हुई धारणा लोकधारणा बन जाती है। पूरे विश्व में ये अनुभव लिखे गए। आरम्भ में, जिस प्रकार आयुर्वेदिक चिकित्सा में तीन दोष हैं, अंग्रेजी चिकित्सा (Allopathy) में भी लोग इन पर विश्वास करते थे। परन्तु आयुर्वेद इनसे आगे गया और खोज निकाला कि एक अवशिष्ट शक्ति भी है जो स्वभाव से मूलभूत (Primodial) है। जागृत होकर यह शक्ति रीढ़ की हड्डी तथा मस्तिष्क में सृजित सात ऊर्जा केन्द्रों में से गुजरकर सर्वव्याप्त मूलशक्ति से सम्बन्ध जोड़ती है।

इस दिशा में शोध करने वालों को भारत में नाथपन्थी कहा जाता था। नाथ अर्थात् 'स्वामी' और पन्थ अर्थात् 'मार्ग'– अर्थात् स्वामित्व प्राप्ति मार्ग। हजारों वर्ष पूर्व मच्छिन्दर नाथ और गोरखनाथ दो सन्त हुए। इन दोनों ने अन्य लोगों के साथ दूर–दूर की यात्रा की। वे युक्रेन भी आये। वहाँ संग्रहालय में प्राचीन मिट्टी के बर्तनों पर इन चक्रों की चित्रकारी देख सकते हैं।

आस्ट्रेलिया, अमेरिका और कनाडा के मूल निवासियों में भी मातृ–संस्कृति पाई जाती है। मैक्सिको की मेयन (Mayan) संस्कृति भी माँ और पृथ्वी माँ को मानती है। बस वे ये न जानते थे कि पावन नामक रीढ़ की हड्डी में स्थित इस सुप्त शक्ति को जागृत कैसे किया जाये। इसका अर्थ ये हुआ कि यूनानी लोगों को इस अस्थि की पावनता का ज्ञान था और आत्मतत्व को भी जानते थे। मार्कण्डेय, आदि–शंकराचार्य, गुरुनानक और ज्ञानदेव जैसे

महान संतो ने इसका वर्णन किया।

सौभाग्य से ईसा मसीह ने भी कहा था कि "मैं तुम्हें आदि शक्ति(Holy Ghost) भेजूंगा" और मोहम्मद साहब ने कहा कि बारहवाँ इमाम आयेगा। भारतीय धर्मग्रन्थों में ज्योतिष शास्त्र के जन्मदाता भृगुऋषि ने नाड़ी ग्रन्थ में भविष्यवाणी की है कि वर्ष 1970 में सहज–प्रणाली की खोज की अभिव्यक्ति होगी। शालीवाहन राजवंश में जन्मी, श्री माताजी निर्मला देवी ने कुण्डलिनी विद्या तथा सामूहिक आत्मसाक्षात्कार वास्तवीकरण का ज्ञान प्रतिपादित किया है। स्वतः जागृति की विधि से हजारों लोग सर्वव्यापक मूल जीवन शक्ति (परमचैतन्य) से जुड़ गये हैं। उन्होंने केवल जागृति और मूल जीवन–शक्ति से योग ही कार्यान्वित नहीं किया, परन्तु हमारे सूक्ष्म–तंत्र का पूर्ण ज्ञान भी प्रदान किया है। केवल रूस में ही असंख्य लोग रोग मुक्त हुए हैं और लोगों के जीवन परिवर्तित हो गए हैं। वे वास्तव में परिवर्तित प्रेममय, दयार्द्र एवं शान्त व्यक्ति बन गए हैं। लोभ और वासना सम असमाजिक आचरण से वे मुक्त हो गए हैं। उनकी चेतना में सामूहिक चेतना का नया आयाम जुड़ जाने के कारण वे लोगों को आत्म–साक्षात्कार प्रदान करने तथा उनके रोग दूर करने में सशक्त हैं।

अतः मानव के सभी आदि–वर्जन स्थापित हो जाते हैं तथा मूल निवासियों में भी आधुनिक जीवन के आघात से जो अपना सत्य–ज्ञान खो चुके हैं, ये मूल–तत्व पुनःप्रस्थापित हो जाते हैं। यह ज्ञान इतना स्पष्ट है कि जादू–टोना तथा काला–जादू आदि का अभ्यास करने वाले लोगों के झूठ का भण्डाफोड़ करता है।

चिकित्सा के आधुनिक विज्ञान पर भी यह प्रकाश डालता है। परन्तु पश्चिमी मस्तिष्क इतना संकुचित है कि पूर्णतः सत्य पर आधारित इस अद्वितीय चीज़ को देखना ही नहीं चाहता। यह शक्ति आपमें निहित है। एक अनुभव का वास्तवीकरण आप महसूस करते हैं। आपकी अंगुलियों के छोरों तथा सिर के तालू भाग से शीतल लहरियाँ बहने लगती हैं जिनका वर्णन अधिकतर धर्मग्रन्थों में किया गया है। आपको अन्धेरे में नहीं छोड़ दिया जाता; अपनी अंगुलियों के छोरों तथा अपने शरीर में आप अपने चक्रों को महसूस कर सकते हैं। आप यदि अपने चक्रों को ठीक करना जानते हैं तो दूसरों के चक्र भी आप ठीक कर सकते हैं, और इसके लिए कोई पैसा नहीं खर्चना पड़ता। विकास की यह जीवन्त प्रक्रिया है, अतः जागृति या आध्यात्मिक उत्थान के लिए आपको कुछ खर्चना नहीं पड़ता।

यह अद्वितीय विधि विज्ञान–विरोधी नहीं है।पाश्चात्य सभ्यता और उपभोक्तावाद ने हमें अंधी उन्नति दी है। परन्तु सहजयोग से आप वास्तविक उन्नति प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि यह प्रकाशरंजित है। इसके माध्यम से रूस वास्तविक सद्चरित्र एवं आन्तरिक आध्यात्मिकता से परिपूर्ण देश बन जाएगा जो विश्व को इक्कीसवीं सदी में ले जाने में सक्षम होगा।

सभी रूसी लोगों को मुबारकवाद!

(अनुवादित)

ईसा मसीह पूजा

गणपति पुले (25.12.1997)

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम लोग यहाँ ईसा मसीह का जन्म दिन मनाने के लिए उपस्थित हुए हैं। ईसा मसीह की जिन्दगी बहुत छोटी थी और अधिक काल उन्होंने हिन्दुस्तान में ही बिताया–काश्मीर में। सिर्फ आखिरी तीन साल के लिए वे वापिस गए और लोगों ने उन्हें सूली (Cross) पर टाँग दिया। यह सब कुछ विधि का लिखा हुआ था। आज्ञा चक्र को खोलने के लिए उन्हें ये बलिदान देना पड़ा और इस तरह से उन्होंने आज्ञा चक्र की व्यवस्था की। आज्ञा चक्र बहुत संकीर्ण है, छोटा सा, और आसानी से खुलने वाला नहीं। क्योंकि मनुष्य में जो स्वतंत्रता आ गई उससे वो अहंकारी बन गया। इस अहंकार ने उसका आज्ञा चक्र बंद कर दिया और उस बंद आज्ञा चक्र से निकलने के लिए अहंकार निकालना बहुत जरूरी है और अहंकार निकालने के लिए आपको अपने मन को काबू करना पड़ता है। लेकिन आप मन से अहंकार नहीं निकाल सकते। जैसे ही आप मन से अहंकार निकालने का प्रयत्न करेंगे, वैसे ही मन बढ़ता जाएगा और अहंकार बढ़ता जाएगा। "अहं करोति सः अहंकारः"। हम करेंगे, इसका मतलब कि अगर हम अपने अहंकार को कम करने की कोशिश करें, तो अहंकार बढ़ेगा क्योंकि हम अहंकार से ही कोशिश करते हैं। जो लोग यह सोचते हैं कि हम अपने अहंकार को दबा लेंगे, खाना कम खाऐंगे, दुनिया भर के उपद्रव, एक पैर पर खड़े हैं, तो कोई सिर के बल खड़ा है! हर तरह के प्रयोग लोग करते हैं अपने अहंकार को नष्ट करने के लिए। लेकिन इससे अहंकार नष्ट नहीं होता, इससे बढ़ता है। उपवास करना, जप–तप करना आदि सब चीज़ों से अहंकार बढ़ता है। हवन से भी अहंकार बढ़ता है क्योंकि अग्नि जो है वो दायें (Right Side) तरफ है। जो कुछ भी हम कर्म–काण्ड करते हैं, Rituals करते हैं, उससे अहंकार बढ़ता है और मनुष्य सोचता है कि हम सब ठीक हैं। हजारों वर्ष से वही–वही कर्म काण्ड करते जाते हैं और उल्टा–सीधा सब मामला जो भी सिखाया गया, वही मनुष्य कर रहा है। इसीलिए सहजयोग कर्मकाण्ड के विरोध में है। कोई भी कर्मकाण्ड करने की जरूरत नहीं और अतिशयता पर पहुँचना तो और गलत बात है। जैसे हमने कहा कि अपने अहंकार को निकालने के लिए आप उसको, मराठी में 'जोड़ेपट्टी' कहते हैं, जूते मारिए, तो रोज सवेरे सहजयोगी जूते ले कर चले पंक्ति (line) में। अरे अगर आप के अंदर अहंकार हो तब। हरएक आदमी हाथ में जूता लिए चला जा रहा है रास्ते में। यह सब कर्मकाण्ड सहजयोग में भी बहुत घुस गए हैं। यहाँ तक कि फ्रांस (France) से भी एक साहब आए थे, वो वाशी के हस्पताल (Hospital) से कर्मकाण्ड ले कर आए। अरे बाबा, यह तो बीमारों के लिए है। आप को अगर यह बीमारी हो तो आप यह कर्मकाण्ड करो। जो Cancer की बीमारी के कर्मकाण्ड हैं, वो भी उसने लिख रखे थे। मैंने कहा कि मनुष्य का स्वभाव है कि कर्मकाण्ड करे। क्योंकि वो सोचता है मैं कर सकता हूँ। मेरे

कर्मकाण्ड से कार्य होगा और इस कर्मकाण्ड में सिर्फ आप ही लोग नहीं हो, परदेस में भी बहुत से लोग कर्मकाण्ड करते रहते हैं। तरह–तरह के। जैसे साल भर में एक बार गिरजाघर (Church) को जाऐंगे, माने आज के दिन। उसके बाद भगवान का नाम भी नहीं लेंगे। दुनिया भर के गंदे काम करके कैथोलिक (Catholic)धर्म में जाकर के वो (confession) कर लेंगे। यह सब मूर्खता अगर आप देख सकें तो आप सहजयोगी हो गए। अगर आप समझ सके कि यह सब गलत काम जो हमने किया, यह गलत हैं और अब से आगे यह काम नहीं करने का, यह अगर आपकी समझ में जाए तो यह बात आपकी समझ में आ जाएगी। अब कर्मकाण्डी लोगों में और भी विशेषताएं होती हैं। एक तो वो एक नम्बर के कंजूस होते हैं। अगर आप उनसे दस रुपए की बात करें तो वे आकाश में कूदने लग जाते हैं। उसको मराठी में 'कौड़ी चुम्बक' कहते हैं। एक बात है। मराठी में ऐसे–ऐसे शब्द हैं जिनसे आपका अहंकार वैसे ही उतर जाए। जैसे कि कोई अपनी बहुत बड़ी–बड़ी बातें बताने लगे कि मैंने ये किया, मैंने वो किया, तो उसको धीमे से कह दीजिए कि तुम चने के पेड़ पर चढ़ रहे हो। चने का पेड़ तो होता नहीं। तो वो ठंडा हो जाएगा। मैंने ये किया, मैंने वो किया। 'मैं', जब तक ये 'मैं' नहीं छूटता , तब तक हमारा ईसा मसीह को मानना गलत है। पर आश्चर्य की बात है जिनको ईसाई राष्ट्र (Christian Nation) कहते हैं उनसे ज्यादा अहंकारी तो मैंने देखे नहीं। विशेषकर अंग्रेज़, अमरीकी, सब लोगों में इस कदर अहंकार है कि समझ में नहीं आता कि ईसा–मसीह के ये कैसे शिष्य हैं! अब इस अहंकार का इलाज क्या है ? वो सोचना चाहिए। इसका इलाज ईसा–मसीह थे और उन्होंने सिखाया है कि आप सबसे प्रेम करें। अपने दुश्मनों से भी प्यार करें। इस का इलाज उन्होंने प्यार बताया है और प्यार के अलावा कोई इलाज नहीं और ये प्यार परम् चैतन्य का प्यार है। उन्होंने साफ–साफ कहा कि आप को खोजो, दरवाज़े खटखटाओ, तो दरवाजा खुल जाएगा। इस का अर्थ यह नहीं कि तुम जाकर के दरवाज़े खटखटाओ। इस का मतलब यह है कि अपने दिल के दरवाजों को खोलिए।

जिस आदमी का दिल छोटा होता है, जो कंजूस होता है वो आदमी कभी भी सहजयोगी नहीं बन सकता और दूसरी चीज़ जो बहुत ज़रूरी है वो ये है कि आपको यदि गुस्सा आता है तो इस का अर्थ है कि आपके अन्दर अभी बहुत अहंकार है। मैंने देखी है गुस्से वालों की स्थिति , विस्फोटक और उससे उन्हें शान महसूस होती। बहुत शान से कहते हैं, मैं बहुत गुस्से वाला हूँ। ऐसे लोग सहजयोग में नहीं रह सकते। जो लोग प्रेम करना जानते हैं और वह भी विशुद्ध प्रेम, ऐसा प्रेम जिसमें कोई आकांक्षा नहीं, कोई इच्छा नहीं। पूर्णतया निरीच्छ जो लोग प्रेम करना जानते हैं, वही सहजयाग में रह सकते हैं। अहंकारी लोग बहुत गलत–सलत कार्य करते हैं। और मैं उनसे तंग आ गई हूँ। अपने ही मन से कुछ शुरु कर देंगे और मुझे बताएंगे भी नहीं। ऐसा करने से आज हज़ारों प्रश्न पैदा हो गए हैं।

आज बताने की बात है दिल्ली में इन्होंने मुझसे एक बार एक पूजा के दिन हड़बड़ी में आकर बताया कि हमें ज़मीन मिल रही है, बस। उससे कितना पैसा लिया, सब कैसे होने वाला है, ज़मीन कैसी है, कुछ नहीं बताया और किसी भी सहजयोगी ने नहीं बताया। क्योंकि कल यदि कोई कहे कि श्री

माताजी ने ऐसा कहा है, तो उस आदमी को आप बिल्कुल छोड़ दीजिए। मुझे कुछ कहना है तो मैं स्वयं कहूँगी। उसके बाद इतनी मीटिंगज़ हो गईं, मुझे कभी कुछ नहीं कहा। अब जिन्होंने उन्हें पैसा दिया, सिर पकड़ के बैठे हैं कि उन्हें ठगा गया है। अब ये पैसा कैसे वापिस मिलेगा ? मुझसे बगैर पूछे सारे काम हो गए, बिल्कुल बगैर पूछे। अब वो इतनी खराब ज़मीन है कि अब नोटिस आया है कि आप उसपर कुछ भी नहीं बना सकते, उल्टे आपको हम पकड़ेंगे। हर एक सहजयोगी को अधिकार है कि मुझे आकर बताए और मुझसे पूछे। उन्होंने कोई अपनी एक सोसायटी बना ली और हो गए पागल कि ज़मीन मिल रही है न। इतनी खराब ज़मीन है कि बताते हैं वहाँ मुर्गी भी नहीं पाल सकते। सहजयोगी क्या मुर्गियों से भी गए बीते हैं ? अब जो भी हुआ, सो मूर्खता है और उसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ। लेकिन आप लोग अपने पैसे वापिस माँग लीजिए। मेरी उसकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है।

ईसा–मसीह ने तो यहाँ तक कहा था कि जो लोग घर में रहते हैं उन्हें पक्षियों की ओर देखना चाहिए। वो अपना घरौंदा कितने प्यार से छोटा सा अपने लिए बनाते हैं और जब वो अपना घर बनाते हैं, तो उस घर को बनाने में उन्हें बड़ा मज़ा आता है। हर तरह से उन्होंने समझाया कि आप ममत्व को छोड़ दीजिए। यह मेरा घर है, यह मेरी ज़मीन है, ये मेरे बच्चे हैं। यहाँ तक कि यह मेरा देश है। यह जो ममत्व है, यह छूटना चाहिए, तभी आप महान हो सकते हैं। सारे विश्व में आप भाई–बहिन है। इसका मतलब यह नहीं कि आप अपनी देशभक्ति को छोड़ दें। यदि आप देश भक्त नहीं हैं तो आप कुछ भी नहीं कर पाएंगे। आप में देश भक्ति होनी ही चाहिए। लेकिन यही देश–भक्त विश्व–भक्त हो जाता है। अगर देश भक्ति ही नहीं है, जब बूंद ही नहीं है तो सागर कैसे बनेगा ? तो प्रथम, आपमें देशभक्ति है या नहीं, यह देखना चाहिए। आप देश के विरोध में यदि कोई कार्य कर रहे हैं तो आप देशभक्त नहीं हैं।

ईसा–मसीह को वापिस जाने की कोई ज़रूरत नहीं थी। उन्होंने कहा भी था कि वहाँ सब ऐसे लोग रहते हैं जिनको सिर्फ मल की इच्छा है। यानि जो मलेच्छ हैं। लेकिन शालिवाहन ने उनसे कहा, नहीं नहीं, तुम जाओ, और उन्हें 'निर्मल तत्वम्' सिखाओ। वो सिखाने गए 'निर्मल तत्त्वम्' और उल्टा उन्हें ही सूली पर चढ़ा दिया गया। पागलों का देश, उनसे कुछ सीखने का था ही नहीं, पर सिखाने का था, इस लिए वो गए और इसीलिए उनका अन्त इस प्रकार हुआ।

समझदारी और क्षमा। क्षमा ही मन्त्र है जिससे आज्ञा चक्र खुलता है यदि आपको किसी के भी प्रति कोई गलत फहमी है, किसी के प्रति आपको कोई द्वेष है या किसी के प्रति हिंसा की प्रवृत्ति है तो आप की आज्ञा ठीक नहीं हो सकती। जो भी आप को करना है प्रेम के द्वारा। आपको किसी को कहना भी है तो इस लिए कहना है, कि उस का जीवन निर्मल हो जाए।

इस का अर्थ यह नहीं कि आप अपने बच्चों को खराब करें। बच्चों को आपको पूरी तरह से अनुशासन (Discipline) में लाना है। अगर आप बच्चों को अनुशासन में ला नहीं सकते, तो आपके बच्चे कभी अच्छे सहजयोगी नहीं हो सकते। और उसके लिए पहले आपमें खुद अनुशासन होना चाहिए। यदि आपमें अनुशासन नहीं होगा तो आप बच्चों को अनुशासित नहीं कर सकते।

ईसा–मसीह का जो जीवन था उसके बारे में बहुत कम लिखा गया है। लेकिन उनके अन्दर इतना अनुशासन था, इस कदर उन्होंने सहा, और अपने जीवन से उन्होंने दिखा दिया। उनको विवाह की भी जरूरत नहीं थी। उन्होंने विवाह नहीं किया। इसका मतलब यह नहीं कि वे विवाह के विरोधी थे। ऐसी गलत फहमी लेकर लोग बैठे हुए हैं और इसी लिए इन्होंने ये महिलाएं बनाई हुई हैं जिन्हें नन (Nun) कहते हैं। उनकी शादी ईसा से करते हैं जो साक्षात् गणेश हैं। उनसे कैसे शादी कर सकते हैं ? उसके अलावा आदमियों को भी शादी नही करनी। इस प्रकार की अनैसर्गिक बातें सिखा दीं। उससे वो सबको अपने कब्जे में रख सकते हैं। पर उससे ईसाई नहीं हो सकते। इस तरह के कृत्रिम बन्धन अपने ऊपर डाल लेने से आज ईसाई धर्म डूब रहा है। ईसा को उन्होंने भुला दिया और अपने ही मन से एक धर्म उन्होंने बना लिया है और उसको ये ईसाई धर्म कहते हैं। आज कल का ईसाई धर्म ईसा के नाम पर कलंक सा लगता है। क्योंकि मेरा जन्म ही इस धर्म में हुआ और मैंने इस धर्म की सभी अन्दरूनी बातें देखीं।

उसी प्रकार हिन्दू धर्म की बात है। हिन्दू धर्म में आप साम्प्रदायिक हो ही नहीं सकते, क्योंकि आप के अनेक गुरुओं, वास्तविक गुरुओं, जैसे दत्तात्रेय जी, नाथपंथी आदि आपके अनेक अवतरण हैं, और आपके स्वयंभु अनेक हैं। आपके एक नहीं, अनेक धर्म ग्रन्थ हैं। ईसाई लोगों में सिर्फ ईसा और बाइबल। वो रुढ़िवादी (fundamentalist) हो सकते हैं। मुसलमान हो सकते हैं और यहूदी लोग भी हो सकते हैं और तीनों का आपस में रिश्ता है, ऐसा धर्म ग्रन्थों में लिखा है। लेकिन हिन्दू नहीं हो सकता साम्प्रदायिक। क्योंकि किसी का कोई, किसी का कोई। कोई महालक्ष्मी को मानता है, तो कोई रेणुका देवी को मानता है, तो कोई कृष्ण को मानता है। हर आदमी, हर परिवार अलग–अलग अवतरणों (Incarnations) को मानते हैं। अलग–अलग धर्म ग्रन्थों को मानते हैं। कोई भी ऐसा धर्म ग्रन्थ नहीं है जो कि बाइबल जैसा हो। इसलिए सब धर्मों का, एक हिन्दू को चाहिए कि मान करे। मैंने देखा है कि हिन्दुओं में मान करने की शक्ति सब से ज्यादा है।

एक बार हम एक होटल में थे, वहाँ एक बाइबल थी। वो सब मेज़ पर बाइबल रखते थे, चाहे कोई पढ़े या नहीं। वो बाइबल नीचे गिर गया तो हमारे साथ एक हिन्दू थे। उन्होंने उस बाईबल को उठाया सिर पर रखा और फिर मेज़ पर रख दिया। कभी बाइबल को पैर से नहीं छुएंगे। कभी नहीं। ईसाई तो ऐसा कर लेंगे पर हिन्दू नहीं करेगा। सब की इज्जत करना यह हिन्दू का धर्म है। पर उससे आज कल जो लोग निकले हैं अजीबो गरीब, जैसे आज के हमारे राजनीतिज्ञ हैं। बरसात में जैसे मशरूम निकल आती है ऐसे ये लोग निकल आये हैं। ये लोग वास्तव में हिन्दू नहीं हैं। इन्हें अपने धर्म के बारे में कुछ मालूम नहीं। उत्तर भारत के लोगों को कुछ भी मालूम नहीं और जो दक्षिण भारत के लोग हैं, उन्हें तो केवल यही मालूम है, कि ब्राह्मण को यहाँ पैसा देना है वहाँ देना है। ये करना है वो करना है। कर्मकाण्ड के सिवाय इस महाराष्ट्र में और कुछ नहीं। इतने कर्मकाण्डी लोग है (मैंने महाराष्ट्र में बहुत मेहनत करी है, सब व्यर्थ गई) कुछ छूट नहीं सकता उनसे। यहाँ एक सिद्धि विनायक का मंदिर है। उसके जो गणेश जी हैं, उनको जागृत मैंने किया। अब देखती क्या हूँ कि वहाँ एक–एक मील की लम्बी कतारें मंगल वार को खड़ी हुई हैं। गणेश जी भी सो गए होंगे। इस कदर

कर्मकाण्डी लोग महाराष्ट्र में हैं कि उस कर्मकाण्ड से उनका स्वभाव ज़रा तीखा हो गया है और उत्तर भारत में भी मैंने देखा है कि कुछ लोग कर्मकाण्डी हैं और जो कर्मकाण्डी लोग हैं, उनमें गुस्सा बहुत है। बहुत तेज़ गुस्सा है और जो लोग कर्मकाण्ड में नहीं हैं वो लोग बहुत शांत हैं। सो पहली चीज़ है कि कर्मकाण्ड बंद करो और हर चीज़ का आदर करो। कर्मकाण्ड बंद करने का यह मतलब नहीं कि सबको लात मारकर फेंक दो। यह संतुलन जो हैं, यही ईसा–मसीह ने सिखाया है। यह संतुलन आए बगैर आपका आज्ञा चक्र नहीं खुल सकता। सबका सम्मान, सबका आदर और बेकार के कर्मकाण्ड जिसमें गलत लोग पनप रहे हैं। आजकल के जो बहुत से झूठे साधु बाबा हैं वे कर्मकाण्ड की वजह से ही हैं। वो कहेंगे कि आप इतने रुपए दो, यह करो, वो करो, यज्ञ करो। एक सौ आठ मर्तबा रोज़ यह नाम लो, वो नाम लो। मंत्र देता हूँ, फलाना करता हूँ। यह सब कर्मकाण्डी हैं और आप लोगों को कर्मकाण्ड सिखाते हैं जिसके पूरी तरह से विरोध में ईसा मसीह थे। क्योंकि वो जानते थे कि कर्म काण्ड करने से आदमी अहंकारी हो जाते हैं और इस अहंकार को तोड़ने के लिए उन्होंने कर्मकाण्ड को एकदम मना किया था। इसी तरह से परमात्मा के नाम पर कोई भी आदमी पैसा कमाए तो इसके विरोध में थे। परन्तु इसका उल्टा शुरु हो गया कि पैसा कमाओ और खाओ। कमाना तो नहीं छूटा पर पैसा कमा लो और खा जाओ, खुद जिससे कोई भी कार्य नहीं हो सकता।

आज सहजयोग के कार्य में हमें याद रखना चाहिए कि हमने सहजयोग के कार्य में क्या आर्थिक योगदान दिया। ईसा मसीह के पास तो 12 मछली मार थे। वो तक फैल गए सारी दुनिया में मेहनत करके। आज आप लोग मेरे इतने सारे शिष्य हैं और आप लोग चाहें तो कितने ही लोंगो को पार करवा सकते हैं, कितने ही लोगों को सहजयोग में ला सकते हैं। पर लोग आधे–अधूरे नहीं रहने चाहिएं बल्कि गहरे उतरने चाहिए। जब तक गहरे नहीं उतरेंगे तब तक आप समझ नहीं पाएंगे, और उसके लिए सबसे बड़ी चीज़ है कि हम उनको कितना प्यार देते हैं और वो कितना प्यार दूसरों को देते हैं। कोई भी आदमी जब सहजयोग में अगुआ (Leader) होता है, तो उसको पहले याद रखना चाहिए कि ईसा–मसीह ने जो देन दी है कि आप सबसे प्यार करो, क्या मैं उसका पालन कर रहा हूँ ? मैं सब पर रोब झाड़ता हूँ, मैं सब को ठिकाने लगाता हूँ, सब के ऊपर आँखें निकालता हूँ, यह अहंकार न केवल सहजयोग के विरोध में है बल्कि उसका नाश करने वाला है। जिस आदमी में भी अहंकार हो, वह उसे कम करे और उस की जगह प्यार से भरे तो जीवन सुखमय हो जाएगा, जीवन सुन्दर हो जाएगा। जीवन सुन्दर हो जाएगा। यदि आप को प्यार करना नहीं आता तो थोड़े दिन आप सहजयोग से बाहर रहें। पहले अपने हृदय के दरवाज़ें खोलें। उसी की शक्ति से सहजयोग फैलेगा। बात यह है कि जो लोग सहजयोग फैलाते हैं उनमें प्यार की शक्ति कम और गुस्से की शक्ति ज्यादा है। कभी नहीं फैलेगा। प्यार से बढ़ेगा और गुस्से से घटेगा और नष्ट हो जाएगा। जो ईसा मसीह की सीख है वो बहुत ज़रूरी है कि हम लोग समझ लें।

परमात्मा आपको धन्य करें।

विश्व सहज समाचार

आस्ट्रेलिया राष्ट्रीय पूजा एवं जन कार्यक्रम

मार्च 1997

इस वर्ष यद्यपि श्री माताजी आस्ट्रेलिया नहीं आईं थीं, फिर भी हमने वार्षिक राष्ट्रीय पूजा एवं गोष्ठी के लिए एकत्र होना आवश्यक समझा और शिवरात्रि पूजा तथा सिडनी में पूजा के पश्चात् दो जन–कार्यक्रम करने का निर्णय किया। पूजा के पश्चात् चैतन्य लहरियाँ बहुत अच्छी थीं क्योंकि भविष्य में होने वाले जन कार्यक्रम साक्षात श्री माताजी की अनुपस्थिति में ही होने की सम्भावना है। इसलिए यह कार्यक्रम सहजयोगियों की विकास प्रक्रिया में एक नई अवस्था के प्रारम्भ को दर्शाते हैं। हमारे लिए सहजयोग ही जीवन है, उत्थान एवं दूसरों के उत्थान में सहायता करना हमारा लक्ष्य है। सामूहिक रूप से हम उस पथ पर चलना प्रारम्भ कर रहे थे जहाँ सहजयोग प्रचार का अधिकतर कार्य करने की जिम्मेदारी हम पर होगी।

पूजाः प्रथम मार्च शनिवार दोपहर पश्चात् आस्ट्रेलिया के सभी राज्यों से तथा न्यूकेलिडोनिया, न्यूजीलैण्ड, एशिया तथा यूरोप से सहजयोगी श्री माताजी द्वारा सुझाए गए स्थान पर पहुँचने लगे। मित्र मिलन तथा रसोई में हृदयपूर्वक परिश्रम करके शुद्धिकरण करते हुए शनिवार सायं हम लोग मुख्य पंडाल में संगीत गोष्ठी के लिए एकत्र हुए। कार्यक्रम का प्रारम्भ स्थानीय भजन गायकों की टोली से हुआ। सर्वप्रथम वाद्य संगीत बजाए गए जैसे भारतीय बाँसुरी, गिटार, ढोलक और पश्चिमात्य बाँसुरी और इसके पश्चात् कविता पाठ किया गया तथा भजन गाए गए।

भजन समूह "म्यूज़िक ऑफ जॉय , भाग दो" की रिकार्डिंग करने के लिए अंतिम चरणों पर है। यह हमारी आशाओं के अनुरूप कार्य करने के लिए वचनबद्ध है। इसके पश्चात् कुलगुरुओं तथा उनके अनुयाइयों पर आधारित ब्रैयानबैल द्वारा लिखित नाटक मंचन द्वारा हमारा मनोरंजन किया गया।

पिछले दिन की गर्मी के पश्चात् रविवार को आनन्ददायी ठंडक में बड़ी शान से सूर्योदय हुआ। श्री माताजी ने सप्ताह के आरम्भ में ही हमें याद दिलवाया था कि श्री शिव हमे शान्त करते हैं। पूजा योजना प्रातः काल ही बना दी गई। कागज़ के फूलों की पार्श्वसज्जा तथा वास्तविक फूलों से मंच को सजा दिया गया। श्री माताजी की शिव रूप में पूजा करने के लिए 400 योगी एकत्र हुए।

कार्यक्रम : यह निर्णय लिया गया कि जन कार्यक्रम इस प्रकार किए जाएं मानो साक्षात् श्री माताजी वहाँ आ रही हों। इसका अभिप्राय है कि तैयारी के लिए विज्ञापन अभियान, पोस्टर लगाना, पर्चे बाँटना और पूरी सामूहिकता का सहयोग देना आवश्यक है। दो भिन्न स्थानों पर जन कार्यक्रम करने का हमने निर्णय किया। एक ही बार विज्ञापन का खर्च करके सिडनी के दो भिन्न क्षेत्रों में जन कार्यक्रम का लाभ उठाया गया। सिडनी के मध्य क्षेत्र स्थित मेसोनिक केन्द्र में 7.30 बजे सायं पहला कार्यक्रम हुआ। हर वर्ष श्री माताजी को देखने के

लिए हजारों लोग इकट्ठे हो जाते हैं। इस बार हमने जो स्थान चुना उसमें 650 लोगों के बैठने की जगह थी। कार्यक्रम के प्रति सामूहिकता की शुद्ध इच्छा तथा चैतन्य सहायता प्रेरक थी। यही सामूहिक शक्ति भविष्य में कार्यक्रम के स्थानों को खचाखच भर देगी।

कार्यक्रम की रात्रि को हॉल 350 नए जिज्ञासुओं और बहुत से उपस्थित योगियों से भरा हुआ था। भजन मंडली के भजनों तथा चमत्कारिक स्लाइडों के प्रदर्शन से कार्यक्रम आरम्भ हुआ। विक्टोरिया के कार्य–भारी श्री जोन हेन्शा ने सहजयोग का परिचय दिया। वे आस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध युवा कलाकारों के विद्यालय के पूर्व प्राध्यापक हैं। सहज सामूहिकता के अन्दर तथा उसके बाहर भी वे अत्यन्त गरिमामय एवं सम्माननीय हैं। कार्यक्रम तथा सहजयोग के विषय में उनका परिचयात्मक भाषण पश्चिमात्य सभ्यता के इतिहास एवं दर्शन तथा आध्यात्मिकता के उनके विपुल ज्ञान एवं अनुभव पर आधारित था।

उन्होंने कहा कि हमारी पश्चिमी जीवन शैली हमें सच्चे आनन्द से वंचित करती है क्योंकि सच्चा आनन्द तो केवल आत्मा से ही प्राप्त हो सकता है। उन्होंने सुझाव दिया कि जो कुछ हम हैं इससे बहुत अधिक बन सकते हैं तथा मानवीय आध्यात्मिक विकास के अगले चरण में प्रवेश कर सकते हैं और यह सब पृथ्वी पर अवतरित महानतम आध्यात्मिक मानव श्री माताजी निर्मला देवी की कृपा से ही सम्भव हो पाया है। यद्यपि वे आज यहाँ उपस्थित नहीं हैं फिर भी आप सब लोग आत्मसाक्षात्कार का अनुभव प्राप्त कर पाएंगे।

इसके पश्चात् श्री माताजी का एक वीडियो चलाया गया और फिर आत्मसाक्षात्कार दिया गया। सेक्सोफोन पर बजाए गए विश्ववन्दिता की धुन ने ध्यान–धारणा की शान्ति को अधिक गहन कर दिया और ज्यों ज्यों हॉल में संगीत लहरियाँ फैलीं जिज्ञासुओं का मन गहन होता गया। श्री माताजी ने कहा है कि संगीत आत्मसाक्षात्कार प्रस्थापित करने में सहायक है। निश्चित रूप से हमारा भी वही अनुभव था।

ध्यान प्रक्रिया के बाद यह बताने के लिए कि उन्होंने दिव्य लहरियों का अनुभव किया है, अधिकतर लोगों ने अपने हाथ उठाये। अन्तिम वक्ता ने ध्यान कार्यशाला में आने वाले सप्ताह में उपस्थित होकर आत्मसाक्षात्कार के अनुभव को प्रस्थापित करने के महत्व पर बल दिया।

कार्यक्रम में योगियों की मनोदशा का वर्णन 'प्रफुल्ल या उल्लसित' शब्दों से किया जा सकता है। सभी लोग दूसरे कार्यक्रम के विषय में सोच रहे थे। कार्यक्रम में चैतन्य लहरियाँ अत्यन्त दृढ़ थीं। हम कार्यक्रम में इस प्रकार गए थे मानो श्री माताजी वहाँ साक्षात् उपस्थित हों और हमें लगा कि वास्तव में वे वहाँ विद्यमान थीं।

दूसरा कार्यक्रम 7 मार्च शुक्रवार पेरामट्ट टाउन हॉल में हुआ। सिडनी क्षेत्र में पेरामट्ट अधिकतम जनसंख्या वाला क्षेत्र है और जब जब भी वहाँ जन कार्यक्रम किए बहुत जिज्ञासु आकर्षित हुए। हॉल 250 नए जिज्ञासुओं और इतने ही योगियों से भरा हुआ था। यह कार्यक्रम भी पहले कार्यक्रम की तरह से ही हुआ। चैतन्य लहरियाँ बहुत तेज थीं। कार्यक्रम के अन्त में श्री माताजी के आत्मसाक्षात्कार रूपी

आशीर्वाद प्राप्ति को स्वीकार करते हुए हॉल में उपस्थित सभी लोगों ने अपने हाथ उठाए।

हर कार्यक्रम के बाद एक सर्वेक्षण किया गया कि कौन से साधनों द्वारा कितने सहजयोगी कार्यक्रम की ओर आकर्षित हुए। कुछ परिणाम नीचे दिए गए हैं :

रंगीन पोस्टर (दुकानों की खिडकियों पर)	35%
स्थानीय समाचार पत्र	20%
दैनिक समाचार पत्र	15%
दीवारों पर लगाए गए बड़े पोस्टर	10%
हस्त पर्चे	10%
मित्रों के माध्यम से	10%

जब हम आस्ट्रेलिया में थे तो श्री माताजी ने कुछ ग्रामीण भूमि खरीदने का सुझाव दिया। हम बलमोरेल गाँव में, जोकि बरवूड से एक घंटे की कार यात्रा की दूरी पर है, एक भूमि खरीदने के लिए प्रयत्नशील हैं। यह आस्ट्रेलियन राष्ट्रीय ग्रामीण सम्पत्ति बनेगी।

क्रिस किरयोक्यो, आस्ट्रेलिया, क्रोशिया और बोस्निया में प्रथम सहजयोग कार्यक्रम

जय श्रीमाताजी,

क्रोशिया की राजधानी जाग्रेब (Zagreb) में मंगलतम दिवस 21 मार्च 1997 को पहला सहजयोग जन कार्यक्रम किया गया। पिछले कुछ महीनों में जाग्रेब में शारीरिक रूप में कार्य करने के लिए श्रीमाताजी का ज्योर्तिमय एवं स्नेहमय चित्त ऐन्ड्री और वेन्सी पर था। आस्ट्रिया से कुछ सहायता प्राप्त कर इन योगियों ने पोस्टर लगाने का एक अभियान चलाया जिससे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के लिए 40 वास्तविक जिज्ञासु आकर्षित हुए। पड़ोसी स्लोवेनिया के कार्यभारी डुसेन ने तीन कारों में भरे हुए स्लोवेनियन योगियों के साथ इस कार्यक्रम का नेतृत्व किया। उपस्थित अधिकतर जिज्ञासु युवा वर्ग के थे तथा उनमें से अधिकतर ने इस शक्तिशाली अनुभव का आनन्द लिया। हमें आशा है कि अनुवर्ती कार्यक्रमों के लिए वे हर बुधवार आएंगे।

सदियों से क्रोशिया यूरोप में कैथोलिक मत का दक्षिण पूर्वी गढ़ रहा है। इसकी सीमा के आगे रूढ़िवादी चर्च की भूमि है और उससे आगे दक्षिण और पूर्व में इस्लामी लोग हैं। क्रोशियन राजधानी से तीस किलोमीटर बाहर हाल ही के युद्ध से ध्वस्त गाँव के अवशेष देखे जा सकते हैं। सौन्दर्य की दृष्टि से क्रोशिया की भूमध्य सागरीय एक लम्बी तथा रमणीय तट रेखा है। इस देश के व्यंजनों में हंगरी का गौलाश (Goulash), इटली के शानदार पीजा, कुछ आस्ट्रियन व्यंजन आदि विशेष हैं अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त युवा वर्ग को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान है तथा वृद्ध पीढ़ी के अधिकतर लोग जर्मन भाषा जानते हैं। बल्कान प्रायद्वीप पर यह ऐतिहासिक क्षण आने से पूर्व एक अन्य महान घटना हुई जब कार्यक्रम से एक माह पूर्व फ्रैन्ज़ (Franz) और जेनलुस (Jean Luc) ने सार जेवो (Sara Jewo) के जिज्ञासुओं के लिए सहजयोग कार्यक्रम का आयोजन किया। उन्होंने आते हुए बसन्त का आनन्द लेते हुए यह यात्रा की और अगली प्रातः कई सत्य साधकों ने उनका स्वागत किया। आत्मसाक्षात्कार अनुभव प्राप्त करने के बाद नए सहजयोगियों ने बार बार पूछा कि आप पुनः कब आएंगे?

नार्वे में अनुभव

नार्वे के लोग अत्यन्त गहन साधक हैं परिणामतः सभी धार्मिक तथा धार्मिक कहलाने वाली संस्थाओं ने इस देश में डेरा डाला है।

4 अप्रैल 1997 को ओस्लो के नए सहजयोग केन्द्र से बर्फ से ढके हुए पहाड़ी रास्तों पर बर्जन (Bergen) नगर के लिए तीन सहजयोगी चल पड़े। रीता हमारे साथ थी। ओस्लो में इसके अथक उत्साह और प्रयत्नों के कारण इसे 'मधुर नन्हा बुलडोजर' भी कहा जाता है। बर्जन जाने के लिए रीता ने हमारा पथ प्रदर्शन किया।

बर्जन नार्वे का दूसरे स्थान का सबसे बड़ा नगर है और कभी देश की राजधानी भी होता था। विश्व के लिए यह अब भी नार्वे दरवाजा है। बर्जन चहुँ ओर से सात पहाड़ियों से सुरक्षित है और सुन्दर झीलों, पेड़ों तथा फूलों की यहाँ भरमार है। अनन्त छोटे छोटे टापुओं से घिरा यह नगर प्रायः दीप (Peninsula) पर स्थित है। बर्जन का सौन्दर्य इस चीज़ में छिपा है कि यहाँ घरों से अधिक प्रकृति है, लोगों से अधिक पेड़ हैं तथा हमारे देखे हुए सभी नगरों से अधिक शान्ति है।

हमारी मुलाकात दो भद्र महिलाओं से हुई जो पिछले सप्ताहों में श्री माताजी के पोस्टर लगा रहीं थीं। उन्होंने सहजयोग और श्री माताजी के विषय में बताने के लिए तथा आत्मसाक्षात्कार प्रदान करके यह समझाने के लिए कि कुण्डलिनी के उत्थान के पश्चात् किस प्रकार जीवन परिवर्तित हो जाता है, सोलह नए जिज्ञासु एकत्र किए। अगली सायं हम पुनः उन सोलह नए जिज्ञासुओं से भी मिले। नए अनुभव के प्रति पूर्ण संदेह एवं अविश्वास समाप्त हो गया था और मित्रता, स्पष्टता तथा प्रेम ने उनका स्थान ले लिया था। यह अद्भुत अनुभव था जैसे आत्मसाक्षात्कार और सामूहिक ध्यान सदैव होते हैं। हमारे नए भाई बहुत प्रसन्न हुए तथा उन्होंने अपने लिए और नार्वे के लिए एक नया स्वप्न देखा।

रविवार को हमें क्रिस्टालिस के जन्मोत्सव पर आमंत्रित किया गया और तीन दिनों के अन्दर हम तीसरी बार सहजयोग में अपने नए भाई बहनों से मिले। कुछ नए लोग भी वहाँ पर थे। जिनमें सबसे छोटी आयु का जिज्ञासु 11 वर्ष का था और सबसे बड़ा 74 वर्षीय। केक और चाय के मध्य हमने सहजयोग का परिचय दिया। श्री माताजी का एक प्रवचन सुना और आत्मसाक्षात्कार का अनुभव पुनः प्राप्त किया। हमनें लोगों पर कार्य किया, बहुत से प्रश्नों का उत्तर दिया, धूमकेतू देखने के लिए बाहर गए और थोड़ा केक खाया। अन्त में हमने एक दूसरे के पते लिए, पुनः आने का और अधिक जानकारी भेजने का वायदा किया। शाम की समाप्ति पर सभी लोग गले लगकर मिले, मानो बहुत पुराने तथा प्रिय मित्र हों।

जब हम ओस्लो वापस आए तो हमें यह बताने के लिए उन्होंने टेलिफोन किया कि मात्र एक ही दिन में उन्होंने पतों, टेलिफोन नम्बर तथा ध्यान

धारणा के लिए स्थान और अगले सप्ताह के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन कर दिया है। जिस प्रकार श्रीमाताजी सदैव प्रदान करती हैं इस बार भी उन्होंने हमारी अपेक्षा से अधिक प्रदान किया।

उसी शाम ओस्लो केन्द्र में हमने ध्यान धारणा की। वहाँ छः नए लोग आए। उन पर कार्य किए जाने के पश्चात् थाइराइडग्रन्थि से पीड़ित एक युवा लड़की ने बताया कि अब उसके गले तथा बाएं कन्धे में दर्द बिल्कुल नहीं है, "मानो उसे बेहोशी का एक टीका सा लगा दिया गया हो, "उसने बताया। इसके पश्चात् उसे बहुत अच्छा महसूस हुआ और कुण्डलिनी उसमें से बह निकली। वहाँ कुछ अन्य सराहनीय संतुलित लोगों से मिलने का भी अवसर हमें प्राप्त हुआ।

परन्तु सर्वोत्तम कार्यक्रम ट्रॉंसबर्ग का था। वहाँ हम सोलह नए साधकों से मिले जो तांत्रिकता तथा अन्य मूर्खताओं को छोड़कर सत्य को पहचानने और गले लगाने के लिए अति उत्सुक थे। हम सब ने परम् चैतन्य का बहुत जोरों से अनुभव किया। श्रीमाताजी साक्षात् वहाँ रही होंगी क्योंकि हम वास्तव में विराट की निर्मला विद्या से जुड़े हुए थे। ऐसे प्रश्नों का हम उत्तर दे रहे थे जो हमने पहले कभी नहीं सुने थे। हममें से एक, जो अंग्रेजी भाषा बोलना भी न जानती थी, श्रीमाताजी और सहजयोग के विषय में अंग्रेजी में इस प्रकार बता रही थी मानो यह उसका प्रतिदिन का कार्य हो। हमने एक दूसरे पर कार्य किया और परस्पर आनन्द बाँटा। समापन के पश्चात् भी कुछ लोग जाना न चाह रहे थे, और जब वो जाने लगे तो चैतन्य लहरियों से ओतप्रोत आनन्द सागर में गोते लगाते हुए उनकी आँखों से अश्रुधारा बह निकली।

जब हम ओस्लो आए तो हमें लगा कि हम अधिक शक्तिशाली, विशाल, कोमल और कहीं अधिक सत्चित्त आनन्द से परिपूर्ण हैं। हमें लगा और अभी तक भी लगता है कि नार्वे ने आदि शक्ति के सम्मुख समर्पण कर दिया है तथा यह हज़ारों गुणा अधिक खिल उठेगा।

नार्वे श्री माताजी की सुन्दर बाँसुरी बनने के लिए तैयार है! नार्वे तुम धन्य हो!

सिदसैल,रीता, मेरिटे एवम् जोन्स

अर्जेन्टिना में कार्यक्रम

अर्जेन्टिना की सामूहिकता छोटी है परन्तु यह समर्पित है। उत्थान मार्ग में यहाँ की बाधाएं भी उत्तरी अमेरिका सी हैं। जब श्री माताजी आती हैं तो बहुत से लोग आते हैं परन्तु जमते नहीं। नये लोगों को स्थापित करने के लिए सामूहिक अवस्था–'सामूहिक शक्ति'–आवश्यक है। लचीली ऊर्जा, प्रेम एवं सामूहिकता ही 'सामूहिक शक्ति' को जन्म देती है। भिन्न बातों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया :

1. श्री माताजी के पोस्टर लगाने के महत्व को याद रखना आवश्यक है। यह मंगलमय कार्य है। पोस्टर लगाना पूजा सम है। भारत में तो पूजा की तरह से कभी कभी श्री माताजी के पोस्टरों को भी कुमकुम लगाया जाता है।

2. नये लोगों के प्रति योगियों के कई कर्तव्य हैं। योगियों में परिपक्वता तथा इच्छा की कमी से नये लोग खो जाते हैं। योगियों को पूरी समझ होनी चाहिए कि नये लोगों के सम्मुख क्या कहना है और किस तरह आचरण करना है।

3. नये लोग स्थापित होने में समय लेते हैं। यह व्यक्ति की अन्तःस्थिति के अनुसार होता है। एक आदमी दो सप्ताह लेता है तो दूसरा दो वर्ष। ब्राजील के कुछ प्रथम योगी साक्षात्कार लेने के तुरन्त पश्चात् भारत चले गए। अति तीव्रता से वे सहज योग में उतर गये। यह समझने के लिए कि नया जिज्ञासु कितना समय लेगा, योगियों में विवेक होना चाहिए।

4. नये साधकों के लिए योगियों के हृदय खुले होने चाहिएं। सभी लोग देख सकते हैं कि नये लोगों की सहायता किस प्रकार की जा सकती है। अगुआगण योगियों को इस मामले में सलाह दे सकते हैं। यह याद रखना आवश्यक है कि चैतन्य ही दैवी विवेक है।

व्यक्तिगत आचरण पर बल देने के लिए महात्मा गांधी का उदाहरण दिया गया। एक पत्रकार ने महात्मा गांधी से पूछा, "आपका संदेश क्या है ?" महात्मा गांधी ने उत्तर दिया, " मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।"

जेवियर, जो अब बोलीविया में हैं, ने उस समय की बातें सुनाई जब वह इटली में था। इटली में बहुत से परिवर्तन किए गए हैं। हवन, जिसमें देवी के 1000 नाम लिए गये, के दो माह के अन्दर वहाँ की राजनीति में पूर्ण परिवर्तन हो गया और माफिया में भी सुधार हुआ। बन्धन, हवन और पूजाओं से कार्य हो जाते हैं। परन्तु 'सामूहिक इच्छा' के बिना ये विधियाँ भी कार्य नहीं करतीं।

दूसरे दिन हवन हुआ जिसमें अमेरिका की बाधाओं की आहुति दी गई। सांयकाल नृत्य एवं संगीत सभा हुई। संगीतज्ञों की तारतम्यता प्रशंसनीय थी। तीसरे दिन का आरम्भ संगीत के साथ ध्यान–धारणा से हुआ। नाश्ते के बाद हमने वातावरण का आनन्द लिया। हममें से कुछ समीप के झरने पर स्नान के लिए गए।

बाईं विशुद्धि

हाल ही में कोलम्बिया में राष्ट्रीय सहज संगोष्ठी हुई जिसमें बाईं विशुद्धि के महत्व पर

प्रकाश डाला गया।

श्री माताजी की 1982 की विष्णुमाया पूजा प्रवचन पर बातचीत हुई। हृदय (आत्मा) से सहस्रार तक बाईं विशुद्धि मार्ग से सम्बन्ध स्थापित होते हैं, इस कारण विशुद्धि अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

सच्चे, खुले हृदय व्यक्ति का हृदय आत्मा समान होता है। उदाहरण के रूप में जब हम सत्यनिष्ठ नहीं होते तो हमारा मस्तिष्क तो कहता है मात्र है परन्तु हृदय जानता है। सत्य–निष्ठा के अभाव में व्यक्ति को बाईं विशुद्धि की समस्या हो जाती है। अर्थात् नीति–कुशलता, प्रतिक्रिया, तर्क संगत ठहराना और पलायन करना आदि।

कैथोलिक चर्च का दोषभाव भी बाईं विशुद्धि की समस्या का कारण है। दोषभय का दबाव सदा बना रहता है। विशुद्धि के विषय में इनमें से कोई भी विचार नया नहीं है। श्री माताजी के प्रवचन को पढ़ना तथा सुनना अति आवश्यक हैं। हमारी चेतना का इतना विकास आवश्यक है कि हम समस्या को देख सकें तथा सहजयोग विधियों से शुद्धिकरण कर सकें।

पावनता (कौमार्य)

पवित्रता अत्यन्त आवश्यक है। अबोधिता धर्म का आधार है। भाई–बहन सम्बन्धों में महान शक्ति है। आज के समाज में 'लड़की मित्र' 'लड़का मित्र' आवश्यक माना जाता है। युवा शक्ति समाज के युवा वर्ग को दिखा सकती है कि सहजयोग द्वारा सच्चा आनन्द प्राप्त किया जा सकता है।

अन्तर्दर्शन

बाईं विशुद्धि को ठीक रखने के लिए अन्तर्दर्शन आवश्यक है। अन्तर्दर्शन में अहं और प्रति अहं को देखें। स्वयं को देखने के लिए अन्तर्दर्शन कठिनतम है।

स्मरण रहे कि श्री विष्णुमाया सत्य की शक्ति हैं, सत्य प्रकट करने वाली शक्ति।

आत्मसम्मान

लेटिन अमेरिका में आत्मसम्मान का अभाव काफी हद तक स्पष्ट है। दूसरे देशों के मुकाबले घटियापन का भाव है। वे समझते हैं कि उनको अन्य सरकारों की सहायता की आवश्यकता है। परन्तु वास्तव में वह संसाधनों में बहुत धनी हैं। सभी आवश्यक संसाधन यहाँ उपलब्ध हैं।

अहंकारमय संस्कृति

पुरानी बातचीत के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि प्राचीन संस्कृतियाँ पृथ्वी माँ से जुड़ी हुई थीं। आधुनिक संस्कृति अहम् से परिपूर्ण है जिसमें पुरातन मूल्यों का अभाव है। हमें याद रखना चाहिए कि हम श्री माताजी के बच्चे हैं।

मूल विधियाँ एवं नियमाचरण

यह महसूस किया गया कि पूजा तथ हवन आदि करने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन तथा नियमाचरण सब तक पहुँचाए जाएं। कुछ देश बहुत ही अकेले पड़ जाते हैं और वहाँ अनुभवी योगियों का भी अभाव है। ऐसी स्थितियों में सहजनियमाचरणों के अतिरिक्त कुछ अन्य विधियाँ भी विकसित कर सकते हैं।

पूजा

पूजा से पूर्व हमने वर्ष 1985 का बर्मिंघम (लंदन) विष्णुमाया पूजा का वीडियो कैसेट देखा।

यह प्रवचन पिछले दिन विशुद्धि चक्र पर हुई बातचीत के अनुकूल था। विष्णुमाया पूजा शाम को आरम्भ हुई और प्रातः तीन बजे के बाद में समाप्त हुई। यह तदात्मय एवं आनन्द का एक गहन अनुभव था। कोई भी पूजा के अन्त के लिए इच्छुक न था।

ब्राज़ील के सहजयोगी बाहर से आए योगियों के लिए बहुत से उपहार लेकर आए। उपहारों में अविश्वसनीय उदारता एवं समर्पण स्पष्ट दिखाई दे रहा था। गोष्ठी में बच्चों के कार्यक्रम में युवाशक्ति एवं छोटे बच्चों ने भी उपहार दिए।

अर्जेन्टिना की सामूहिकता ने एक अद्वितीय चित्रकारी भेंट की जिसमें दक्षिण अमेरिका का आकाश से लिया गया एक दृश्य खींचा गया था। इसमें यह द्वीप कमलों के सागर में तैरता हुआ दिखाई दे रहा था। बाईं विशुद्धि की इस भूमि की चोटी पर ईसा मसीह खड़े थे और सर्वोपरि देवदूतों के दायरे के बीच श्री माताजी का मुस्कराता हुआ मुखारविन्द था जो दक्षिण अमेरिका के प्रति दिव्य प्रेम दर्शा रहा था। पूजा एवं उपहार वितरण के पश्चात् लगभग सूर्योदय तक भजन चलते रहे।

समापन दिवस

हमने 4 अगस्त 1985 में ब्रिटेन (इंग्लैण्ड) में हुई गणेश पूजा का वीडियो कैसेट देखा जिसका शीर्षक है 'पावित्र्य ही आपकी शक्ति है।' वीडियो के पश्चात् गोष्ठी की अन्तिम बातचीत हुई। तत्पश्चात् रीयो के योगियों को इतने समर्पण एवं कठिन परिश्रम द्वारा इस संगोष्ठी का आयोजन करने के लिए धन्यवाद दिया गया। जो आनन्दानुभव हमने इस अवसर पर प्राप्त किया उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है। एक ऐसी गहनता के कगार पर हम पहुँचे जहाँ अब तक कभी न पहुँच पाए थे। चैतन्य लहरियाँ और आनन्द इतना तीव्र था मानो श्री माताजी साक्षात वहीं उपस्थित हों!

सूक्ष्म एवं व्यवहारिक स्तर पर भी संगोष्ठी अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। चैतन्य लहरियों पर हमारे सामूहिक ध्यान से अमेरिका की संघटनात्मकता का बहुत हित हुआ। नए भाई बहनों से बातचीत करके वास्तव में परिवर्तन आए। हम कामना करते हैं कि दूसरी लैटिन अमेरिकी संगोष्ठी का आयोजन शीघ्र ही हो।

ईयान बटरबर्थ, कैलागिरी, कनाडा

प्रपंच और सहजयोग

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

दादर , मुम्बई 29.11.1984

(मराठी से अनुवादित)

आप सभी सत्य साधकों को हमारा नमस्कार। आज का विषय है 'प्रपंच और सहजयोग।' सर्वप्रथम प्रपंच शब्द का अर्थ देखते हैं : प्रपंच (प्र+पंच) में 'पंच' पाँच महाभूतों द्वारा निर्माण कार्य को बताता है। परन्तु इससे पहले 'प्र' आने के कारण इसका अर्थ परिवर्तित हो जाता है अर्थात् पंच महाभूतों को जो प्रकाशित (Enlighten) करता है वह 'प्रपंच' है।

"अवधाची संसार सुखाचाकरीन" (समस्त संसार सुखमय बनाऊँगा) तो यह सुख प्रपंच में प्राप्त होना चाहिए। प्रपंच छोड़कर अन्यत्र परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती। आम लोग 'योग' का अर्थ हिमालय पर जाकर तपस्या करना और ठंड से मर जाना लगाते हैं। यह योग नहीं है, हठ है– हठ भी नहीं मूर्खता है। योग के विषय में यह धारणा बिल्कुल गलत है। महाराष्ट्र में जितने भी सन्त हुए वे सब गृहस्थ थे। उन्होंने प्रपंच किया। परन्तु 'दास बोध' (श्रीरामदास स्वामी विरचित मराठी ग्रन्थ) के हर पृष्ठ में प्रपंच बह रहा है। प्रपंच के बिना आप परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते। यह बात उन्होंने अनेक बार कही है। प्रपंच त्यागकर परमेश्वर को प्राप्त करने की धारणा पिछले बहुत से वर्षों से हमारे देश में आई है क्योंकि गौतम बुद्ध प्रपंच त्यागकर जंगल में गए और उन्हें वहाँ आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ। परन्तु वे यदि गृहस्थ में रहते तो भी उन्हें साक्षात्कार होता। मान लीजिए हमें दादर जाना है, तो हम सीधे मार्ग से वहाँ पहुँच सकते हैं। परन्तु हम भिवण्डी जाएं, वहाँ से पूना जाएं और फिर कई और जगह घूमकर दादर पहुँचें। एक रास्ता सीधा है और दूसरा घुमावदार। घुमावदार मार्ग ही सच्चा है, यह बात ठीक नहीं है। उस समय क्योंकि सुगम को उन्होंने दुर्गम बना डाला तो क्या हमें भी ऐसा ही करना चाहिए ? 'सहज समाधि लागो'। कबीर ने विवाह किया, गुरुनानक देव जी ने विवाह किया, राजा जनक से लेकर अब तक जितने भी बड़े बड़े अवधूत हो गए हैं वे सभी गृहस्थ थे। उसके बाद बहुत से ऐसे सन्त आए जो विवाहित न थे, परन्तु किसी ने भी विवाह संस्था को गलत नहीं कहा और न ही प्रपंच को गलत कहा। तो सर्वप्रथम हमें अपने दिमाग से यह धारणा निकाल देनी होगी कि योग प्राप्ति के लिए प्रपंच का त्याग आवश्यक है। इसके विपरीत यदि आप प्रपंच करते हैं (गृहस्थ जीवन में हैं) तो आपको सहजयोग में अवश्य आना चाहिए।

दादर में जब हमने सहजयोग शुरु किया तो बहुत से लोग प्रपंच (गृहस्थ) की शिकायतें लेकर, आते थे। मेरी सास ठीक नहीं है, मेरा ससुर ठीक नहीं है, मेरा पति ठीक नहीं है, मेरे बच्चे ठीक नहीं हैं। इस तरह प्रपंच सम्बन्धी छोटी–छोटी शिकायतें लेकर वे सहजयोग में आते थे। शुरु में ऐसा ही होता है। घरेलू कष्टों से तंग होकर उन्हें दूर करने के लिए हम परमात्मा के पास जाते हैं और यह मांगते हैं कि , 'हे परमात्मा मेरा घर ठीक रहे, मेरे बच्चे ठीक रहें, हमारी गृहस्थी सुखी रहे, सभी खुशी

से रहें। बस। मनुष्य की पहुँच अत्यन्त तुच्छ होती है और उसी छोटेपन से वह देखता है। परन्तु यह छोटापन भी जरूरी है, इसके बिना मामला नहीं बनने वाला। पहली सीढ़ी चढ़े बिना दूसरी सीढी पर नहीं आ सकते। तो प्रपंच सहजयोग की आवश्यक सीढ़ी है। हम सन्यासी को आत्मसाक्षात्कार नहीं दे सकते। नहीं दे सकते, क्या करें ? बहुत बार प्रयत्न करके देखा पर मामला नहीं बनता। उसके लिए व्यर्थ का बडप्पन किसलिए ? वस्त्र तो व्यक्ति ने सन्यासी के पहने हैं, पर अन्दर से क्या वह सन्यासी है ? सन्यास एक भाव है। यह दिखावा नहीं है कि हम सन्यासी हैं, हमने सन्यास लिया है, घर छोड़ा है, यह छोड़ा है, वह छोड़ा है। इस प्रकार जो लोग सोचते है कि हम योग मार्ग तक पहुँच जाएंगे वे अपने आप को भुलावे में डाल रहे हैं। यदि आप पलायनवादी हैं तो उसका कोई इलाज नहीं है। बुद्धिमान व्यक्ति को सोचना चाहिए कि यहाँ हम प्रपंच में हैं। यहाँ से निकलकर यदि हमने कुछ प्राप्त कर भी लिया तो उसका क्या लाभ होगा। मान लो किसी जंगल में आपको ले गए और वहाँ बैठकर आपने कहा, "देखिए मैं कैसे पानी के बगैर रह सकता हूँ ?" तो कौन सी विशेष बात है। पानी में रहकर भी जब आपको पानी की जरूरत न हो, पानी में रहकर भी जब आप पानी से अलिप्त हों, ऐसी स्थिति आपकी हो जाए, तो सच्चा प्रपंच हो सकता है। आज हमें ऐसे ही प्रपंच की आवश्यकता है। राजा जनक के विषय में तो आप जानते ही हैं। नचिकेता ने सोचा कि यह राजा तो अपने सिर पर मुकुट पहनते हैं, दास–दासियाँ इनकी सेवा करती हैं, इनके महलों में नृत्य–गायन होता रहता हैं, फिर भी जब यह आश्रम में आते हैं तो हमारे गुरु इनके चरण छूते हैं! इनमें ऐसी क्या महानता है ? उनके गुरु ने कहा, "तुम स्वंय जाओ और देखो कि यह कैसे महान है ?" नचिकेता उनके महल में गए और कहने लगे, " आप मुझे आत्मसाक्षात्कार दीजिए, मेरे गुरु ने कहा है कि आप आत्मसाक्षात्कार देते हैं तो कृपा करके आप मुझे आत्मसाक्षात्कार दीजिए" राजा जनक कहने लगे, "तुम यदि सारे विश्व का राज्य मांगते तो भी मैं दे देता, पर मैं तुम्हें आत्मसाक्षात्कार नहीं दे सकता। जिस मनुष्य को आत्मसाक्षात्कार का तत्व ही नहीं मालूम उसे आत्मसाक्षात्कार कैसे दें ? तत्व को समझने वाला व्यक्ति ही उसमें उतर सकता है। " तो 'प्रपंच'का तत्व है 'प्र' अर्थात् प्रकाश (enlightenment), वह जब तक आपमें जागृत नहीं होता तब तक आप 'पंच' में हैं, 'प्रपंच' में नहीं उतरे।

नचिकेता ने यह प्रश्न जब राजा जनक से पूछा तो उन्होंने कहा कि तुम मेरे साथ आओ। बाकी सारी कहानी आप जानते हैं। अन्त में नचिकेता समझ गए कि राजा जनक को न तो किसी चीज़ से लगाव है, न किसी चीज़ की चिन्ता है और न ही किसी सांसारिक चीज़ के प्रति मोह। वे तो एक अवधूत हैं जो मुकुट भी धारण कर लेंगे और पृथ्वी पर भी सो जाएंगे। वे बादशाह हैं। हर स्थिति में वे प्रसन्न रह सकते हैं। कोई भी चीज़ उन्हें पकड़ नहीं सकती। जो व्यक्ति प्रपंच में है उसे किसी आराम की या किसी गुलामी की आदत नहीं पड़ती। पत्थर का सिरहाना बनाकर वह सो सकता है, चोकर की रोटी खाकर भी वह उतना ही आनन्दित होता है जितना दावत के व्यंजन खाकर। उससे अगर पूछा जाए कि आश्रम बनाना है तो कैसे करें ? तो वह सब बता देगा कि सीमेन्ट कहाँ मिलेगा, यह कहाँ मिलेगा वो कहाँ मिलेगा। यह तत्व की बात है, इसे आप समझ लीजिए।

नामदेव जी ने एक कविता लिखी जिसे नानक साहब ने सम्मानपूर्वक गुरु ग्रन्थ में स्थान दिया। यह अत्यन्त सुन्दर है। मैं इसका आशय वर्णन करती हूँ। कविता में कहा है कि, "आकाश में पतंगे उड़ रही हैं और एक लड़का हाथ में उस पतंग की डोर पकड़कर खड़ा है, वह सब बातें कर रहा है यहाँ वहाँ भाग रहा है परन्तु उसका पूरा चित्त (attention) उस पतंग पर है। "एक और दोहे में उन्होंने कहा है कि, "बहुत सी औरतें पानी भरकर ले जा रही हैं। रास्ते पर जाते हुए वह आपस में मज़ाक कर रही हैं, घर की बातें कर रही हैं, परन्तु उनका सारा चित्त सिर पर रखे घड़ों पर है कि कहीं वे गिर न जाएं। "एक अन्य दोहे में माँ का वर्णन है। "माँ बच्चे को गोद में लेकर सभी काम करती है। चूल्हा जलाती है, खाना बनाती है। उन कामों में कभी वह झुकती है, कभी भागती है। सब कुछ उसे करना पड़ता है फिर भी उसका सारा चित्त अपने बच्चे पर होता है कि कहीं बच्चा गिर न जाए।" साधु सन्त भी ऐसे ही होते हैं। सभी कार्यों का उन्हें ज्ञान होता है, सभी कार्य वे करते हैं परन्तु उनका सारा चित्त अपनी आत्मा पर होता है। सच्चे सन्त बिलकुल आपकी तरह गृहस्थ में रहने वाले होते हुए भी इनमें वैचित्र्य होता है, वह आपको पहचानना चाहिए। यही वैचित्र्य 'सहजयोग' है। इस वैचित्र्य से क्या लाभ होते हैं यह देखना जरूरी है क्योंकि प्रपंच में आप देखते हैं कि लाभ कितना है और हानि कितनी है। आजकल के युग में परमात्मा की बातें करने से लोगों को लगता है कि, " इस महिला को अभी आधुनिक शिक्षा वगैराह नहीं मिली है, यह कोई पुराने ज़माने की बेकार नानी, दादी की कथा सुना रही है। "परन्तु परमेश्वर है और वह रहेगा। वह अनन्त है। परन्तु परमेश्वर हमारे साथ प्रपंच में किस तरह कार्यान्वित होता है, यह देखना चाहिए।

मान लो किसी को कोई समस्या है। किसी ने मुझ से कहा, "श्री माताजी मेरे घर में तकलीफ है, मेरा काम धन्धा नहीं है।" इस तरह की छोटी–छोटी तुच्छ बातें, "यह ऐसा है, वैसा है।" थोड़े दिनों के बाद वह कहता है, "माताजी सब कुछ ठीक हो गया है।" तो सब कैसे होता है ? यह देखना चाहिए। एक दिन की बात है, हमारी एक शिष्या है, विदेशी है। मैं 'शिष्या' वगैरा तो कहती नहीं हूँ , बच्चे कहती हूँ , तो दोनों लड़कियाँ थीं। वो दोनों जर्मनी से एक मोटर में जा रही थीं। जर्मनी में 'आटोबान' करके बहुत बड़े रास्ते होते है जिन पर बड़ी तेजी से गाड़ियां इधर–उधर दौड़ती हैं। उन्होंने मुझे चिठ्ठी लिखी, दोनों तरफ से ट्रक, बड़ी–बड़ी बसें, बड़ी–बड़ी कारें जो डबल लोडर होती हैं, वह सब जा रही थीं और बीच में हमारी मोटर। मोटर का ब्रेक भी काम नहीं कर रहा था और गाड़ी भी कम्पन कर रही थी। मुझे लगा कि अब मैं गई, अब तो मैं बच ही नहीं सकती। यदि ब्रेक भी कुछ ठीक होता तो कुछ उम्मीद थी। तो उस स्थिति में एक तरह की प्रेरणा आ गई जिसे हम आपातकालीन प्रेरणा कहेंगे। ऐसे लगा मानो, " अब सब कुछ गया, कुछ भी नहीं रहा, विनाश का समय आ गया है।" तो शरणागत होकर उसने कहा, " श्री माताजी अब आपको जो करना है करें, मैं तो आँखे मूंद लेती हूँ। और उसने आँखे बन्द कर लीं।" उसने चिठ्ठी में लिखा था, "थोड़ी देर बाद मैंने देखा तो मेरी कार अच्छी तरह से एक तरफ आकर रुकी हुई थी और उसका ब्रेक भी ठीक हो गया था।" अब माताजी ने कुछ नहीं किया था, यह आप देखिए कि यह कैसे होता है ? मतलब यह जो परिणाम हुआ है वह किसी न किसी कारणवश

हुआ है अर्थात् 'कारण व परिणाम।' मान लो आपके घर में झगड़ा है उसका कारण है आपकी पत्नी या आपकी माँ या आपके पिताजी या कोई अन्य मनुष्य और उसका परिणाम है घर में अशान्ति। सर्वसाधारण व्यक्ति 'परिणाम' से ही लड़ता रहेगा। अभी मुझे इससे लड़ना है। फिर कोई दूसरी लड़ाई निकल आएगी, फिर तीसरी। परन्तु कारण पर कितने लोग सोचते हैं ? जो लोग विवेकशील होते हैं वे 'परिणाम के कारण' से लड़ते हैं। पर वह 'कारण' भी उनसे लड़ना शुरु कर देता है, तथा 'कारण' और परिणाम के चक्कर में पड़ने से समस्या वैसी ही बनी रहती है। उससे छुटकारा वे नहीं पा सकते। इसलिए लोग कहते है कि 'प्रपंच करना बहुत कठिन काम है।' इसका इलाज क्या है? **इसका इलाज यह है कि 'कारण' से परे जाना होगा।** उसका जो कारण था, ब्रेक टूट गया था, उस ब्रेक से वह लड़ रही थी। परन्तु जब उसे महसूस हुआ, इस सबके परे भी कुछ है कोई शक्ति है और वह शक्ति कारण के परे होने से कारण भी नष्ट हो गया और उसका परिणाम भी नष्ट हो गया। ये ऐसे होता है। आप विश्वास करिए या मत करिए, पर ये बात होती है। परन्तु ये अन्ध–विश्वास से नहीं होती है। अब बहुत से लोग मेरे पास आकर कहते हैं, "माताजी हम इतना भगवान को याद करते हैं परन्तु हमें कैन्सर हो गया, मन्दिर में जाते हैं, सिद्धिविनायक के मन्दिर में रोज़ जाकर खड़े रहते हैं, घंटे–घंटे। मंगल के दिन तो विशेष करके जाते हैं, परन्तु तब भी हमारा कुछ भी अच्छा नहीं किया, फिर हम इसे क्यों भजें ?" ठीक है। परन्तु आप जिस भगवान को बुला रहे हैं उसका आपका क्या कोई कनेक्शन (सम्बन्ध) हुआ है ? आपका जब तक कनेक्शन नहीं हुआ, तब तक अच्छा कैसे होगा? भगवान तक आपके टेलीफोन का कनेक्शन तो होना चाहिए। इस तरह आप रात दिन परमेश्वर की पूजा करते हैं ? परन्तु क्या आप जो बोल रहे हैं उस परमेश्वर को सुनाई दिया है ? चाहे जो धंधे करो, चाहे जैसा बर्ताव करो और उसके बाद 'हे परमात्मा, मुझे आप देते हैं कि नहीं ? कहकर उसके सामने बैठ जाना। उस परमात्मा ने आपको किसलिए देना है ? आपका कोई कनेक्शन होगा तो आप कुछ भारत सरकार में माँग सकते हैं, क्योंकि आप उसके नागरिक हैं, परमात्मा के साम्राज्य के नहीं। पहले उसके साम्राज्य के नागरिक बनिए, फिर देखिए उसकी याद करने के पहले ही परमेश्वर ये करता है कि नहीं। अब समझ लीजिए यहाँ पर बैठे–बैठे ही कोई अगर इंग्लैण्ड की रानी को कहेगा कि वह हमारे लिए ये नहीं करती, वह नहीं करती। वह आपके लिए क्यों करने लगी ? तो यहाँ तो परमात्मा है और वह परमात्मा आपके लिए क्यों करने लगे ? आप उनके साम्राज्य में अभी आए नहीं हैं। केवल उन पर तानाशाही करना 'हे परमात्मा' जैसे कोई वे आप की जेब में बैठे हैं ? और अब आपको ये भी विचार नहीं है कि हमें परमात्मा का स्मरण करना है। सुस्मरण कहा है, स्मरण नहीं कहा है। सुस्मरण करते समय भी 'सु' शब्द है। 'सु' माने क्या ? जैसे 'प्र' शब्द है वैसे ही 'सु' शब्द है। 'सु' माने जहाँ मनुष्य का सम्बन्ध होकर आपमें मांगल्य का आशीर्वाद आया हुआ है तभी वह सुस्मरण होगा। अन्यथा तोते की तरह बिना समझे बोलना है। उसका असर युवा पीढ़ी पर होता है। वे कहते हैं "इस परमात्मा का क्या अर्थ हुआ ? परमात्मा का नाम लेकर यहाँ दो बाबा आए और हमारी माँ का पैसा ले गये, वहाँ कोई गले में काला धागा बाँध गये और रुपया ले गए। ऐसे परमात्मा का क्या अर्थ हुआ ?" इसलिए उनका

कहना ठीक लगता है। फिर उनकी तरह और लोग भी कहते हैं "परमात्मा है ही नहीं।" परन्तु सर्वप्रथम अपनी समझ में ये गलती हुई है कि क्या हमारा परमात्मा के साथ कोई सम्बन्ध हुआ है ? क्या हमारा उन पर अधिकार है ? हमने उनके लिए क्या किया है ? ये तो देखना चाहिए। पहले उनके साथ अपना कनेक्शन (सम्बन्ध) जोड़ लीजिए।

अब सहजयोग माने परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ना। सहज शब्द में 'सह' माने अपने साथ, 'ज' जन्म हुआ। जन्म से ही आपमें योग (सम्बन्ध जोड़ना), योग सिद्धि का जो अधिकार है, वह माने 'सहजयोग' है। आपमें परमात्मा ने कुण्डलिनी नाम की एक शक्ति रखी है वह आपमें स्थित है। आप विश्वास कीजिए या न कीजिए। क्योंकि ऊपरी (बाह्य) आँखों (दृष्टि) वाले लोगों को कुछ कहना कठिन है। विशेषकर अपने यहाँ के साहित्यिक और बुद्धिजीवी लोग विचारों पर चलते हैं। और विचार कहाँ तक जाएंगे, इसका कोई ठिकाना नहीं है। किसी विचार का किसी से मेल नहीं है। इसलिए इतने झगड़े हैं। तो इन विचारों के परे जो शक्ति है, उसके बारे में अपने देश में परम्परागत अनादिकाल से बताया गया है। उस तरफ कुछ ध्यान देना जरूरी है। परन्तु इन विचारवान लोगों में इतना अहंकार है कि वे उधर ध्यान देने के लिए तैयार नहीं। हो सकता है शायद इसमें उनके पेट का सवाल हो। परन्तु सहजयोग में आने के बाद पेट के लिए आप आशीर्वादित होते हैं। परमात्मा से सम्बन्ध घटित होने के बाद आप की समस्याएं ऐसे हल होती हैं कि आपको आश्चर्य होगा। "ऐसा हमने क्या किया है ? इतना हमें परमात्मा ने कैसे दे दिया ? इतनी सही व्यवस्था कैसे हो गयी ?" ऐसा सवाल आप अपने आपसे पूछ कर चकित रह जाते हैं। ज्ञानदेव की 'ज्ञानेश्वरी' का आखिरी पसायदान (दोहा) आपने सुना होगा। उन्होंने जो वर्णन किया है वह आज की स्थिति है। ये सब अब घटित होने वाला है। जिस चीज़ की जो इच्छा करेगा वह (दिव्य आनन्द) उसे प्राप्त होगी। परन्तु वह करने के पहले आप केवल कुण्डलिनी का जागरण कर लीजिए। उसके बिना मैं आपको कोई वचन नहीं दे सकती और न मिनिस्टर (मन्त्री) लोगों की तरह आश्वासन देती हूँ। जो बात है वह मैं अपनी बोली में अपने ढंग से कह रही हूँ। कोई साहित्यिक भाषा में नहीं बोल रही हूँ। जैसे कोई माँ अपने बच्चे को घरेलू बातें समझाती है उसी तरह मैं आपको समझा रही हूँ। आप में जो सम्पदा है वह प्राप्त कीजिए। आप कहते हैं हम प्रपंच में बंध गए हैं। 'बंध गए हैं' माने क्या ? तो फालतू बातों का आपको महत्व लगने लगा। मुझे नौकरी मिलनी चाहिए, वो क्यों नहीं मिल रही है, क्योंकि बेकारी ज्यादा है ? माने बेकार ज्यादा हैं इसलिए बेकारी क्यों ज्यादा है ? बेकारों की संख्या बढ़ रही है। वो बढ़ती ही जाएगी। इन कारणों के परे कैसे जाना है ? उसका इलाज है कि वह जो शक्ति हमारे चारों तरफ है उसका आह्वान करना होगा। मनुष्य में वह शक्ति मूलाधार चक्र में रहती है। मूलाधार में ये जो शक्ति है वह प्रपंच में कैसे कार्यान्वित है यह आप देखिए। अपना ध्यान उस (शक्ति की) तरफ होना चाहिए और सर्वप्रथम ये विचार होना चाहिए कि मूलाधार में जो कुण्डलिनी शक्ति है वह श्री गणेश की कृपा से वहाँ बैठी है। अब इस महाराष्ट्र को बहुत बड़ा वरदान है कहना चाहिए। यहाँ जो अष्टविनायक हैं वह आपके लिए परमात्मा का बहुत बड़ा उपकार हैं। इसी कारण महाराष्ट्र में मैं सहजयोग स्थापित कर सकी हूँ क्योंकि श्री गणेश का जो

प्रभाव है उसी का आप पर आवरण है। उसी आवरण के कारण सचमुच मेरी बहुत मदद हुई है। ये श्रीगणेश आपके मूलाधार में विराजमान हैं। अब कोई डॉक्टर है तो वह अपने घर में श्री गणेश का फोटो रखेगा। मन्दिर भी बनाएगा। वहाँ जाकर नमस्कार करेगा। परन्तु श्रीगणेश का और डॉक्टरी का क्या सम्बन्ध है ये उसके समझ में नहीं आएगा और उसे वह स्वीकार भी नहीं करेगा। परन्तु श्रीगणेश के बिना डॉक्टरी भी बेकार है। अब ये श्रीगणेश शक्ति आपमें है उसी के कारण आपके बच्चे पैदा होते हैं। अब जरा सोचिए, एक माता–पिता जिस तरह उनके चेहरे हैं उसी तरह का बच्चा पैदा होता है। हजारों, करोड़ों लोग इस देश मैं हैं , दूसरे देशों में हैं। परन्तु हर एक का बच्चा या तो उसके माता–पिता की तरह होता है, नहीं तो दादा–दादी या उस परिवार के किसी व्यक्ति के चेहरे पर होता है। तो इसका जो नियमन है वह कौन करता है ? वह श्रीगणेश करते हैं।

आपका ये कर्तव्य है कि अपने घर में जो गणेश (बच्चे) हैं उनमें जो बालसुलभ अबोधिता है उसे स्वीकार करें। वह अबोधिता अपने में आनी चाहिए। घर में छोटे बच्चे होते हैं। छोटे बच्चे कितने अबोध होते हैं! उनके सामने हम गाली गलौच करते हैं, बुरे शब्द बोलते हैं। ऐसे वातावरण में हम उनको पालते हैं, जहाँ सब अमंगल है। उनकी तरफ हम कोई ध्यान नहीं देते। यही (बच्चे) तो आपके घर के गणेश हैं। उनके संवर्धन में, पालन–पोषण में आपका ध्यान नहीं है। आजकल तो इंग्लैण्ड में 80 वर्ष की आयु की औरतें भी शादी करती हैं। तो अब क्या कहें कुछ समझ में नहीं आता! वहाँ की बुराई यहाँ मत लाओ। वहाँ की बुराई वहीं रहने दीजिए। ते अति शहाणे त्यांचे वैल रिकामे, (जो ज्यादा सयाने हैं उनकी खोपड़ी खाली है।) तो श्रीगणेश की नाराज़गी हम पर न हो उसका निश्चय करना होगा।

श्रीगणेश हममें बैठकर हमारे बच्चों का पालन करते हैं। प्रथम जनन और उसके बाद पालन। और वह जो भोला गणेश (बच्चा) है वह घर के सभी लोगों को आनन्द देता है। किसी घर में बच्चा पैदा होते ही कितनी खुशियाँ छा जाती हैं। उस बच्चे से कितनी आनन्द की लहरें घर में फैलती हैं। परन्तु जिस घर में बच्चा नहीं होता वहाँ कैसा खालीपन सा महसूस होता है! ऐसा लगता है उस घर में जाएं नहीं क्योंकि वहाँ बच्चों की किलकारियां नहीं, हँसना नहीं, खिलखिलाना नहीं, वह मस्ती नहीं। ऐसे घर में कोई माधुर्य नहीं होता। परन्तु आजकल जमाना कुछ दूसरा ही है। जिन देशों को समृद्ध (affluent) कहते हैं उन देशों में बच्चे पैदा ही नहीं होते। उनकी आबादी बढ़ती जा रही है। इसलिए लोग कहते हैं यह बहुत बुरा है। आपके देश की आबादी इतनी नहीं बढ़नी चाहिए। मान लिया, परन्तु कहना ये है कि जो बच्चे आज जन्म ले रहे हैं उनमें भी अक्ल होती है। वे क्यों उन देशों में जन्म लेने लगे ? वे कहेंगे वहाँ रोज पति–पत्नी तलाक लेते हैं और बच्चों की हत्या कर डालते हैं। वही हमारे साथ होगा। क्योंकि यहाँ भारत में माँ–बाप को बच्चों के प्रति आस्था, जो प्रेम, जो सहज–बुद्धि है वह इन लोगों में (अमीर देशों में) बिल्कुल नहीं है। आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि लंदन शहर में माँ–बाप एक हफ़्ते में दो बच्चों को मार देते हैं। जितना सुनोगे उतना कम है। मुझे तो रोज धक्का–सा लगता है पर उन्हें उसका कुछ भी असर नहीं है। वे लोग अहंकार में इतने डूबे हैं कि उन्हें उचित–अनुचित का भी ध्यान नहीं। वहाँ जाकर

मालूम हुआ कि हिन्दुस्तानी मनुष्य कितना अच्छा है। यहाँ भारत के टेलिफोन ठीक नहीं है, माईक ठीक नहीं हैं, रेलगाड़ियां ठीक नहीं है। सब कुछ मान लिया। पर लोग तो ठीक हैं। वह गहनतम अच्छाई में गणेश तत्व। जिस घर में गणेश तत्व ठीक नहीं है वहाँ सब कुछ गलत होता है। बच्चे बिगड़ने का दोष मैं समाज से ज्यादा माँ–बाप को देती हूँ। आजकल माँ भी नौकरी करती हैं बाप तो करते ही हैं, तब भी जितना समय आप अपने बच्चों के साथ काटते हैं, वह कितना गहन है ये देखना जरूरी है।

अब सहजयोग में आने पर क्या होता है ये देखना है। मतलब सहजयोग का सम्बन्ध आपके बच्चों के साथ किस प्रकार है। सहजयोग में आपकी गणेश शक्ति जो जागृत होती है वह कुण्डलिनी शक्ति के कारण है। प्रथम मनुष्य में सुबुद्धि आती है। हम उसे विनायक (गणेश) कहते हैं। वही सबका सुबुद्धि दाता है। मैंने ऐसे बच्चे देखे हैं, जिन्हें लोग मेरे पास लेकर आते हैं, कहते हैं, बच्चा कक्षा में एकदम फिसड्डी है, खाली मस्ती करता है, मास्टरजी से उल्टा–सीधा बोलता है। मैंने उससे पूछा , तुम ऐसे क्यों करते हो ? उसने कहा, मुझे कुछ नहीं आता और मास्टरजी भी मुझे डाँटते रहते हैं। फिर मैं क्या करूं ? वही बच्चा फर्सट क्लास फर्सट (प्रथम श्रेणी, प्रथम स्थान) में पास हुआ है। ये कैसे हुआ है ? श्री गणेश आप में जागृत होते ही वह शक्ति आपमें बहने लगती है और आप में एक नया 'आयाम' शुरु हो जाता है। उस आयाम को हम 'सामूहिक चेतना' कहते हैं। अभी तक जो चीज़ें व्यक्ति को दिखाई नहीं देती थीं वे अब सहज ही में अनुभव होने लगती हैं।

ये नया आयाम एक नयी चेतना–शक्ति आपमें आने लगती है उस शक्ति से मनुष्य सच्चा समर्थ हो जाता है और उस समर्थता से एक चमत्कार घटित होता है। जो बच्चे बेकार हैं, जो किसी काम के लायक नहीं हैं, माने जो शराब वगैरा पीते हैं– आजकल आपको मालूम है ड्रग वगैरा चलता है– हमने तो कभी चरस नाम की चीज़ नहीं देखी थी। अब मालूम होता है कि आजकल स्कूलों में चरस बिकती है। ये सब मूर्खता, सुबुद्धि न होने के कारण होती है। वह सुबुद्धि जागृत होते ही जो लोग इंग्लैण्ड, अमेरिका में चरस लेते हैं वे यह सब छोड़कर अच्छे नागरिक बन गए हैं। ये सहजयोग की शक्ति है। बच्चों में शिष्टाचार नहीं हैं क्योंकि माँ–बाप आपस में लड़ते हैं, बच्चों का आदर नहीं करते। उनसे चाहे जैसा व्यवहार करते हैं। जैसी माँ–बाप की प्रकृति, वैसी ही बच्चों की बन जाती है और वे वैसे ही असभ्य आचरण करते हैं। सहजयोग में आकर माता–पिता की कुण्डलिनी अगर जागृत हो गयी और बच्चों की भी हो गयी तो फिर सब एकदम कायदे से व्यवहार करते हैं। पहले आत्म–सम्मान जागृत होता है। उपदेश करने से आत्म–सम्मान जागृत नहीं होता। परन्तु सहजयोग में कुण्डलिनी जागृति से मनुष्य में सम्मान आता है।

अपने देश में सत्तारूढ़ लोगों का सम्मान करने की प्रथा चली आ रही है। उनकी सत्ता जिनके पास हो उन्हीं के चरणों में झुकना चाहिए बाकी सब ऐरे–गैरे नत्थु–खैरे आज आएंगे कल चले जाएंगे। उनका कोई मतलब नहीं, बेकार हैं वे लोग। जिन्होंने गणेश को अपने आप में जागृत किया है उनके सामने झुकना चाहिए।

गणेश शक्ति जागृत होते ही आदमी में बहुत अन्तर आ जाता है। जैसे कि आजकल पुरुषों की नज़र इधर–उधर दौड़ती रहती है, चंचल है, आज्ञाचक्र

पकड़ती है। हरदम पागलों की तरह इधर–उधर देखते रहना, जिसे कहते हैं तमाशगीर। आजकल तमाशगीरों की बड़ी भारी संख्या है। महाराष्ट्र में भी शुरु हुआ है। हम जब छोटे थे, स्कूल, कालिजों में पढ़ते थे तब हमने ऐसे तमाशगीर नहीं देखे थे। परन्तु अब ये नये लोग निकले हैं। ये लोग हरदम अपनी आँखें इधर से उधर दौड़ाते रहते हैं। उससे बहुत शक्ति नष्ट होती है और उसमें किसी भी प्रकार का आनन्द नहीं है। (नीरस क्रिया) कहना चाहिए। उसीमें अपना सारा चित्त लगाकर अपनी आँखें इधर–उधर घुमाते रहते हैं। हर दम इधर–उधर देखना, जैसे रास्ते के विज्ञापन देखना। गलती से कोई विज्ञापन देखना छूट गया तो उन्हें लगेगा जैसे अपना कुछ महत्वपूर्ण काम चुक गया। फिर से आँख घुमाकर वह विज्ञापन पढ़ेंगे। हर एक चीज़ देखना ज़रूरी है। ये जो आँखों की बीमारी है यह एकदम नष्ट होने पर ही मनुष्य सहजयोग में एकाग्र होता है। जब इसमें एकाग्र दृष्टि आती है। ऐसी एकाग्र दृष्टि व गणेश शक्ति अगर जागृत हो जाती है, उसे "कटाक्ष निरीक्षण" कहते हैं। आपकी कटाक्ष दृष्टि जहाँ पड़ेगी वहाँ कुण्डलिनी जागृत हो जायेगी। जिसकी तरफ आप देखेंगे उसमें पवित्रता आ जाएगी। इतना पवित्र्य आँखों में आ जाएगा। ये केवल अकेले गणेश का काम है। और ये गणेश आपके घर ही में है। अपने अपने गणेश को पहचाना नहीं अगर पहचाना होता तो अपनी पवित्रता में स्थित होते। जो पवित्र है वही करना चाहिए। परन्तु आपने अपने गणेश को नहीं पूजा। कोई बात नहीं। अपने घर में बच्चे हैं, उनके गणेश को देखिए। उन्हें पूजनीय बनाइए और अपने गणेश को भी। आप अपनी कुण्डलिनी जागृत करवाइए। परन्तु सहजयोग की विशेषता ये है कि ये सहज में होता है। उसके लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं। कुण्डलिनी जागृत होने पर मनुष्य में सुबुद्धि आती है और उस मनुष्य का सारा व्यक्तित्व एक विशेष प्रकार का हो जाता है। अब यहाँ पर जो साहित्यिक लोग होंगे वे कहेंगे माताजी कोई भ्रामक (विचित्र) कहानियाँ सुना रही हैं। परन्तु आपको सुनकर आश्चर्य होगा अहमद नगर जिले में सहजयोग के कारण दस हजार लोगों ने शराब छोड़ी है। मैं शराब छोड़ने को नहीं कहती, मैं कुछ नहीं बोलती। जैसे भी हो आप आइए। आकर अपना आत्मा रूपी दिया जलाइए। दिया जलने के बाद शरीर में क्या दोष हैं वे आपको दिखाई देंगे। जब तक दिया नहीं जलेगा तब तक साड़ी में क्या लगा है ये नहीं दिखाई देगा। उसी तरह एक बार दिया जला कि सब कुछ दिखाई देगा। बिल्कुल थोड़ा सा भी जल गया तो भी आपको दिखाई देगा कि अपनी क्या क्या त्रुटियाँ हैं। आप ही अपने गुरु बनिए और अपने आपको अच्छा बनाइए। स्वयं को पवित्र बनाइए। जो लोग पवित्र होते हैं उनके आनन्द की कोई सीमा नहीं। उनके आनन्द का कोई ठिकाना नहीं रहता। किसी ने कहा है, "जब मस्त हुए फिर क्या बोलें ?" अब हम मस्ती में आए हैं तो उस मस्ती की हालत में अब हम क्या बोलें ? ऐसी स्थिति हो जाती है। पवित्रता आनन्दमयी है और केवल आनन्दमयी ही नहीं, पूरे व्यक्तित्व को सुगंधमय कर देती है। ऐसा मनुष्य कहीं भी खड़ा होगा तो लोग कहेंगे " हे भाई कुछ तो कुछ विशेष बात है इस मनुष्य में।" जिन्हें विशेष बनना है वे बनेंगे। आप विशेष बनने वाले हैं ये सर्वविदित है। वह आपको अर्जन करना है, कमाना है। जिन्हें विशेष बनना है, उन्हीं प्रपंचिक लोगों के लिए, घर–गृहस्थी में रहने वाले लोगों के लिए सहजयोग है जिन्हें कुछ बनना नहीं, जो

समझते है हम बिल्कुल ठीक हैं, हमें कुछ नहीं चाहिए माताजी, तो भाई ठीक है, आपको हमारा नमस्कार। आप पधारिए। आप पर हम ज़बरदस्ती नहीं कर सकते। अगर आपको पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करनी है तो हमें आपकी स्वतन्त्रता की रक्षा करनी है। अगर आपको नर्क में जाना है तो बेशक जाइए, और अगर स्वर्ग में आना है तो आइए। हम आप पर कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं कर सकते।

सर्वप्रथम अपने प्रपंच में सुख का कारण बच्चा होता है बच्चे के गर्भ में आते ही घर में आनन्द शुरु हो जाता है। माता के कष्टों की समाप्ति के पश्चात् बच्चे का अत्यन्त उल्लास के बीच जन्म होता है। आजकल मैंने देखा है कि जो लोग पार हैं उनके जो बच्चे होते हैं, वे जन्म से ही पार होते हैं, चाहे वे लोग कहीं भी रहें। कितने ही बड़े–बड़े सन्तों को जन्म लेना है। सबको मैं देख रही हूँ। वे कह रहे हैं , "ऐसा कौन है जो हमारी आत्मा को सुचारु रखेगा। ?" ऐसे–वैसे लोगों के यहाँ साधु–सन्त नहीं जन्म लेते। ऐसे बड़े–बड़े सन्त आज जन्म लेने वाले हैं और उनके लिए ऐसे लोगों की जरूरत है जिनके प्रपंच सचमुच ही प्रकाशित हैं। और ऐसे प्रकाशित प्रपंच निर्माण करने के लिए आप सहजयोग अपनाकर अपनी कुण्डलिनी जागृत करवा लीजिए।

वह होने के बाद दूसरे चक्र से जिसे हम 'स्वाधिष्ठान' चक्र कहते हैं उससे प्रपंच में बहुत लाभ होते हैं। स्वाधिष्ठान चक्र का पहला काम है, आपकी गुरु–शक्ति को प्रबल बनाना। बहुत से घरों में मैंने देखा है, पिता की कोई इज्ज़त नहीं, माँ की कोई इज़्जत नहीं। छोटे–छोटे 15,16 साल के बच्चे की सब कुछ हैं। आजकल बाज़ार में मैं देखती हूँ हमारे जैसे व्यस्क लोगों के लिए साड़ी खरीदना एक समस्या है। सभी साड़ियाँ युवा लडकियों के लिए ही हैं। बड़े–बूढ़े लोगों के लिए साड़ियाँ बनाने का आजकल रिवाज़ ही नहीं रहा। पहले जमाने में बूढ़े लोगों के पास पैसा रहता था, उनके लिए सब–कुछ ठीक–ठाक रहता था। अब बूढ़े लोगों को कोई पूछता नहीं। उनके लिए शादी–ब्याह में एकाध साड़ी खरीदना भी मुश्किल हो गया है। जिस समय ये गुरु–शक्ति आपमें जागृत होती है तब ये जो बूढ़ापन, वृद्धत्व आता है, उसमें तेज़स्विता जागृत हो जाती है। अब हम एक बड़े बुजुर्ग आदमी को लें। अपने पिता भी कभी–कभी बिल्कुल मूर्खों की तरह बर्ताव करते हैं। माँ महामूर्खों की तरह बर्ताव करती हैं। बाहर से जो लोग आते हैं उनके सामने किस तरह से रहना है उसे नहीं मालूम। चिल्लाती रहती हैं, सारा ध्यान उसका चाबियों पर, नहीं तो जात–पात के लड़ाई–झगड़ों पर रहता है। कोंकणस्थ की शादी कोंकणस्थ से ही होनी चाहिए, देशस्थों की देशस्थों से। ऐसा नहीं हुआ तो सास लड़ती है। ये जो बुड्ढे लोगों की अजीब बातें हैं, ये तब खत्म हो जाती हैं और उनके स्थान पर उस बूढ़ेपन में एक तरह की "तेजस्विता" आ जाती है। वह व्यक्ति अपने सम्मान के साथ खड़ा रहता है। आपको लगेगा " अरे बाप रे! हमारे पिताजी ये क्या हो गए पहले जमाने के जो दादोजी कोंडदेव (शिवाजी के ज़माने के लोग) वगैरा लोग थे, क्या वही यहाँ खड़े हो गए ?" और तुरन्त उनके सामने हम विनम्र हो जाते हैं।

तो इस युवा पीढ़ी में जो खलबली मची हुई है बात–बात पर तलाक, पत्नी के साथ लड़ाई, माँ–बाप से नहीं बनती, घर में रह नहीं सकते, घर से बाहर भाग जाना, छोटी–छोटी बातों पर लड़ाई–झगड़े, ये सब हो रहा है। काम–धंधा नहीं,

पैसे नहीं, सभी बुरी आदतें, सब तरफ से आजकल की युवा पीढ़ी एक बड़े संक्रमण–काल की तरफ बढ़ रही है। उनकी पृष्ठभूमि (background) बहुत महान है। मैं कहती हूँ महाराष्ट्र की पृष्ठभूमि तो बहुत ही महान है। पर वह सब भूलकर भी पढ़ेंगे नहीं, सुनेंगे नहीं। अब संगीत का अपने महाराष्ट्र में कितना ज्ञान है ? साधु–सन्तों का कितना साहित्य है अपनी भाषा में। पर वह सब किताबें कौन पढ़ता है ? गंदी किताबें सड़क पर खरीद कर पढ़ना। कुछ अत्यन्त नकली, (जो गहराई में नहीं जाते, बस ऊपर ऊपर उतराते रहते है) इस तरह की युवा पीढ़ी बनती जा रही है। इस युवा पीढ़ी को अगर इसी तरह रखा तो ये इसी हवा में खो जाएगी। किसी काम की नहीं रहेगी। मुझ से पूछिए आप, मैं अमेरिका गई थी तो 65% पुरुष बेकार हैं। वहाँ के जो लोग हैं उन्हें एक डर है। वहाँ 'एड्स' नाम की कोई बीमारी है। उससे सभी युवा लोग मर रहे हैं और उन्हें समझ में नहीं आ रहा कि इससे कैसे छुटकारा मिले ? उसका कारण है, 'ये करने में क्या हर्ज है? इसमें क्या बुरा है ?' हो गए होंगे श्री रामदास स्वामी, हमें उनसे क्या मतलब ? वह सब बातें रखिए अपने पास। हम अब मॉडर्न बन रहे हैं' बड़े आए मॉडर्न बनने वाले! वे (अमेरिकन) मॉडर्न कहाँ गए हैं। देखिए एक बार उन देशों में जाकर। वहाँ के मॉडर्न लोगों की क्या स्थिति है ये जरा जाकर देखिए। यहाँ के लेखकगण यहीं बैठकर वहाँ के वर्णन लिखते रहते हैं। वहाँ जाकर देखिए। वहाँ के व्यस्क लोग रात–दिन एक ही बात सोचते हैं, हम किस तरह आत्महत्या करें ? एक'ही विचार है उनका, आत्महत्या। यही एक रास्ता है उनके पास। तो हवा में खत्म होने वाले जो ये लोग हैं उनकी तरह आपको मॉडर्न होना है तो आपको हमारा नमस्कार। परन्तु आप को अपनी शक्ति में खड़ा रहना है और कोई विशेष बनना है, तो आप जो चले जा रहे है सो रुकना पड़ेगा। ज़रा शांत होकर सोचिए ये (विदेशी) जो सारे दौड़ रहे हैं, जो रैट रेस (अंधी दौड़) चल रही है उसमें मैं भी क्या भाग रहा हूँ ? एक मिनट शान्त होकर सोचना चाहिए हमारी भारतीय विरासत क्या है ? सम्पत्ति के बटवारे में यदि एक छोटा टुकड़ा कम–ज्यादा मिला तो कोर्ट में लड़ने जाते हैं परन्तु अपने इस देश की बड़ी परम्परा है। उस तरफ किसी का ध्यान नहीं। वह खत्म होने जा रही है। उसका हमने कितना लाभ उठाया है ? इसका ज्ञान सहजयोग में आने पर वयस्क लोगों को होता है। क्योंकि जब उन्हें मालूम होता है कि हम पहले जो थे उससे कितने ऊँचे उठ गए हैं। मेरे बचपन में मेरे पिताजी ने मुझ से कहा था सर्वप्रथम इस युवा वर्ग की जागृति होनी चाहिए। दसवीं मंजिल (चेतना के स्तर) पर बैठे साधु–सन्त नहीं समझ पाते कि साधारण लोगों की, जो अभी पहली मंजिल पर भी नहीं पहुँचे, चेतना की क्या अवस्था है। ये (साधारण लोग) ताल–मंजीरे अवश्य बजाते हैं, किन्तु उन गीतों व भजनों के पीछे क्या भाव है यह वे नहीं समझते। जब वे पहली मंजिल (आत्मसाक्षात्कार) पर पहुँचेंगे तब उन्हें पता चलेगा कि उससे ऊपर और भी मंजिलें हैं।

तो इस सर्वसाधारण मानवीय चेतना के परे एक बहुत बड़ी चेतना है। उसे 'ऋतंभरा शक्ति' कहते हैं। वह आपको सहज में प्राप्त होती है। वह प्राप्त होने के बाद आपको अपने जीवन का दर्शन होगा। हम क्या हैं, कितने महान हैं और हम ये जो अपने जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, ये क्या हमें शोभा देता है ? कितनी आपके पास सम्पदा है

आपने अपनी क्या इज्जत रखी ? आपको अपने बारे में कुछ पता नहीं है। ये आप समझने की कोशिश कीजिए और सहजयोग में अपनी जागृति कराइए। इसी तरह आजकल की युवा पीढ़ी है। ये भी परमात्मा के साम्राज्य में सहज में आ सकती है। इस युवा–पीढ़ी को पार कराना बहुत आसान काम है। सारे भोलेपन में गलत काम करते हैं। इनका सब भोलापन ही है। एक लड़का सिगरेट पीता है तो मैं भी पीऊँ, बस! किसी ने कुछ विशेष तरह के कपड़े पहने तो मैं भी पहनूंगा, इतना ही! सब कुछ भोलापन। परन्तु कभी–कभी भोलेपन से ही अनर्थ हो सकता है। परन्तु यही युवा–पीढ़ी आज कहाँ से कहाँ पहुँच सकती है। आज अपने देश में किस बात की कमी है ? कोई कहेगा खाने की है। परन्तु मुझे तो ऐसा कुछ दिखाई नहीं देता। मुझे लगता है हम ज्यादा ही खाते हैं और दूसरों को भी देते हैं। मैं जब भी यहाँ आती हूँ तो सबको हाथ जोड़कर बोलती रहती हूँ , अब खाना बस करिए मुझे अब नहीं चाहिए। हर एक मनुष्य वहाँ कहता है कि हिन्दुस्तान में खाने की कुछ कमी नहीं दिखाई देती, क्योंकि इतना खिलाते हैं, आग्रह कर करके। लगता है खाना ही न खाएं। तो अपने यहाँ कमी किस बात की है ? वाद–विवाद, चर्चा करने में भी लोग नंबर एक हैं। वे अगर यहाँ खड़े होंगे तो मुझसे भी जबरदस्त भाषण देंगे। सभी बातों में बहुत होशियार हैं हम लोग। कुछ ज्यादा ही होशियार! सब कुछ है हमारे पास, सोना–चाँदी, सब कुछ। कमी किस बात की है ? सोचकर देखिए हममें किस बात की कमी है। **एक ही कमी है कि हमें ज्ञान नहीं कि हम कौन हैं ? मैं कौन हूँ ? इसका अभी तक ज्ञान नहीं है। जिस समय ये घटित होगा तब पूरा शरीर पुलकित हो उठेगा और आपके शरीर से प्रेम अर्थात् चैतन्य की लहरियाँ बहने लगेंगी।** केवल ये घटना आप में घटित होनी चाहिए। इसकी कोई गारंटी नहीं दे सकता। होगा तो होगा, नहीं तो नहीं भी। आज नहीं तो कल घटित होगा।

इस प्रपंच में आपकी आर्थिक समस्याएं हैं। महाराष्ट्र में देखो तो "श्री माताजी, गरीबों को आप से क्या लाभ होगा ?" आप क्या हैं, गरीब हैं या अमीर, या मध्यम ? फिर आपको क्या लाभ चाहिए? आप चाहे मध्यम हों, अमीर हों, रईस हों, चाहे गरीब, किसी को भी संतोष नहीं। रेडियो है तो वीडियो. चाहिए। वीडियो है तो एयरकंडीशनर चाहिए। और उसके बाद जहाज चाहिए। और आगे क्या, वह परमात्मा ही जाने! Economics (अर्थशास्त्र) का एक सर्वसाधारण नियम है। इच्छाएं आम तौर पर कभी भी पूरी नहीं होती। आपकी एक इच्छा हुई तो वह पूरी होगी। परन्तु साधारणतया ऐसा होता नहीं। आज एक हुई, कल दूसरी, उसके बाद तीसरी। एक बात स्पष्ट है जो हमने इच्छा की वह शुद्ध इच्छा नहीं थी। अगर वह शुद्ध इच्छा होती तो वह पूरी होने के बाद हमें पूर्ण समाधान होता। परन्तु ऐसा है नहीं। मतलब आपकी इच्छा शुद्ध नहीं थी। अशुद्ध इच्छा में रहे। इसलिए एक के बाद दूसरी, तीसरी, चौथी, इस चक्कर में आप घूमते रहे। अब शुद्ध इच्छा साक्षात कुण्डलिनी है। क्योंकि वह परमात्मा की इच्छा है। ये जागृत होते ही जो आप इच्छा करोगे ..... जो जे वाँछिले, तो ते लाहो (जो जिसकी इच्छा है वह उसे प्राप्त होगा।) इतनः कि आप कहेंगे अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। आपकी जो इच्छाएं हैं वे पूरी होती हैं, परन्तु वे इच्छाएं जड़ वस्तुओं की नहीं होती। उनमें एक तरह की प्रगल्भता, उदात्ता होती है। और आपकी जो छोटी–छोटी बातें

हैं वह कृष्ण के कथनानुसार "योग क्षेम वहाम्यहम्" जब आपका योग घटित होगा तो क्षेम भी प्राप्त हो जाएगा। परन्तु पहले योग कहा है, "क्षेम योग" नहीं कहा है। "योग क्षेम वहाम्यहम्" पहले योग घटित होना जरूरी है। सुदामा को पहले कृष्ण को जाकर मिलना पड़ा तब उसकी सुदामा नगरी सोने की बनी। आपका कहना है हम यहीं बैठे रहेंगे और हाथ में सब कुछ आ जाये। क्यों? परमात्मा पर आप इतना अधिकार क्यों जताते हैं। किसलिए ? चार पैसों के कृत के लिए और परमात्मा को दे आए। इसलिए ? उलटे इसमें आपकी बड़ी गलती है। बहुत से लोग मैंने देखा है जो शिवभक्त हैं वे 'शिव–शिव' करते रहते हैं और उन्हें हार्ट अटैक होता है। शिव आप के हृदय में बैठे हैं। फिर ऐसा क्यों ? उन्हें हार्ट अटैक क्यों हुआ ? क्योंकि शिव नाराज़ हो गये, आप किसी मनुष्य को ऐसे बुलाते रहें बार–बार, तो उसे भी लगेगा ये आदमी मुझे क्यों परेशान कर रहा है। कल आप राजीव गांधी के घर जाकर "राजीव, राजीव" ऐसे कहते रहें तो लोग आपको कैद कर लेंगे। और इससे आपको न परमात्मा की प्राप्ति हो रही है और न ही प्रपंच की। ऐसी स्थिति है। इसलिए 'मध्य मार्ग' में आना जरूरी है। और मध्य मार्ग को सुषुम्ना नाड़ी का मार्ग कहते हैं। वहाँ से जब कुण्डलिनी का जागरण होता है तब मनुष्य बीचों–बीच (मध्य में) आकर समाधानी होता है। बिल्कुल समाधानी बन जाता है।

आजकल संतोषी देवी का व्रत चला है। संतोषी नाम की कोई देवी है ही नहीं। सिनेमा वालों ने यह निकाली तो लगे सब व्रत रखने। जो स्वयं संतोष का स्त्रोत है उसे क्या कहेंगे वह संतोषी है। और इसी तरह कुछ गलत–सलत बनाते रहते हैं। व्रत रखना, आज खट्टा नहीं खाना, ये करना, वह नहीं करना। कुछ तमाशे करते रहना और फिर परमात्मा को दोष देना, हम इतना परमात्मा की सेवा करते हैं फिर भी हम बीमार हैं। उसके बारे में कुछ दिमाग से सोचना चाहिए।

परमात्मा के जो नियम हैं, उनका विज्ञान है। वह पहले आप सीख लीजिए। वह सीखे बगैर गलत–सलत करते हो। फिर कुछ बिगड़ गया तो उसे क्यों दोष देते हो ? परमात्मा है या नहीं, यही सिद्ध करने के लिए हम आए हैं। बिल्कुल सिद्ध करने के लिए। आपके हाथों से चैतन्य बहेगा। आपके हाथों की उंगलियों पर परमात्मा मिलने वाले हैं। परन्तु उसके लिए आपकी तैयारी है ? बुद्धि ज्यादा चलती है। श्री माताजी क्या कह रही हैं ? जरा दिमाग ठंडा कीजिए, फिर होगा। आपकी समस्याएं अगर आपकी बुद्धि से हल होती तो हमें इतनी मेहनत करने की जरुरत नहीं थी। परन्तु ये आपकी राजकीय समस्याएं हल नहीं होने वाली, न सामाजिक और प्रपंच की तो बिल्कुल ही नहीं। राजकीय प्रश्न ये हैं कि हम (Capitalist) पूंजीपति हैं। उसी के लिए लड़ रहे हैं । क्या वे लोग सुखी हैं ? स्वतन्त्रता भी संभाली जाती है उनसे ? दूसरे कहते हैं हम कम्युनिस्ट (साम्यवादी) हैं। किन्तु सच्चे पूंजीपति तो हम हैं क्योंकि हमारे पास शक्ति है। ये सब ऊपरी बातें हैं। इसमें आप लोग मत उलझिए। आप अपने–आप में (अपने भीतर) परमात्मा का साम्राज्य लाइए और उसके नागरिक बनिए। फिर देखिए आप क्या बनते हैं! उसके लिए प्रपंच छोड़ने की जरूरत नहीं है। पैसे देने की जरूरत नहीं है। इसमें क्या पैसे देने ? ये तो जीवन्त प्रक्रिया है आपमें। किसी पेड़ को आपने पैसे दिए तो क्या वह आपको फूल देता है ? उसे क्या मालूम पैसा क्या चीज़ है ? उसी तरह परमात्मा है। उन्हें पैसे

वगैरा नहीं मालूम। किसी बाबाजी को ले आते हैं और उसे कहते है, ये लो पैसे। गाँव में हमारे विषय में कहा माताजी पैसे नहीं लेती। तो कहते हैं अच्छा 10 पैसे नहीं तो 25 ले लीजिए। परन्तु पैसे किस चीज़ के दे रहे हो ? ये (आत्म साक्षात्कार) तो आप ही का है। इसे क्या खुद से खरीदोगे ? प्रेम के द्वारा सब कुछ काम होता है। वह प्रेम प्राप्त करना होगा, जो आजकल प्रपंच में नहीं है। और जो प्रेम नजर आता है वह गलत तरीके का है। किसी पेड़ को आपने देखा होगा। उसका रस ऊपर आता रहता है और जिस जिस भाग को चाहिए उसे देते देते वह अपनी जगह तक जाता है। वह किसी फूल पर या पत्ते पर नहीं अटकता। अटक गया तो बस वह पत्ता भी खत्म और वह पेड़ भी खत्म और फूल भी खत्म। उसी तरह हम लोगों का है। हमारा प्रेम माने " मेरा बेटा! वह तो दुनिया का नवाब शाह हो गया! मेरी बेटी , मेरा काम", 'मेरा–मेरा' चलता रहता है। वह क्या आपका है ? लेकिन ये कह सुनकर नहीं होने वाला। कितना भी कह छोड़िए, 'मेरा–मेरा' नहीं छूटने वाला। उसे छुड़वाने के लिए आप की कुण्डलिनी उठनी चाहिए। वह उठने के बाद और आप पार होने के बाद 'तुम्हारा–तुम्हारा' की शुरुआत होती है। कबीर ने कहा है जब बकरी जीवित होती है तब बार–बार मैं–मैं करती है। "मैं–मैं–मैं" करती है। लेकिन मरने के बाद उसकी आँत निकाल कर उसका तार खींचकर धुंदके में बांधी जाती है तो उसमें से आवाज़ होती है "तूही–तूही–तूही"। उसी तरह मनुष्य का है। एक बार जब आपकी कुण्डलिनी जागृत होती है तब लगता है सब कुछ 'तुम्हारा' है। मनुष्य 'अकर्म' में उतरता है। फिर ये बच्चे, सगे–सहोदर सभी तुम्हारे! लोगों को आश्चर्य होता है, ये सब कैसे होता है ? इस बम्बई शहर में इतने लोगों की प्रपंचिक स्थिति में सुधार आया है कि आपको आश्चर्य होगा। परन्तु हम उस तरफ देखते ही नहीं। हमें विश्वास ही नहीं है। नहीं करते तो मत करिए। पता नहीं आपको अपने स्वयं पर भी भरोसा है या नहीं, परमात्मा ही जाने! अब ये व्यर्थ समाचार पत्र वादिता छोड़कर सचमुच की वर्तमान स्थिति में क्या हो रहा है ये देखना चाहिए। श्रीकृष्ण आए, कुछ एक परम्परा लेकर आए और उन्होंने कृषि का कार्य किया। एक बीज बोया। आज वह सम्पदा आपको इस स्थिति तक लाई है। आप फूलों से फल बनने वाले हैं। वह आपको प्राप्त कर लेना चाहिए। अगर इस बार आप चूक गए तो समझ लीजिए हमेशा के लिए चूक गए। आपकी सारी प्रपंचित समस्याएं खत्म होकर आप परमात्मा के प्रपंच में आते हैं। उनके प्रपंच में आए बगैर आपको सुख नहीं मिलने वाला। सारी दुनिया भर के दुःख परमात्मा के चरणों में आने से खत्म होते हैं, ऐसा कहते हैं। परन्तु इसका मतलब ये नहीं कि आप जाकर विट्ठल (श्रीकृष्ण) के चरणों में सर फोड़ लें। श्री विट्ठल को अपने आपमें जागृत करना है। उसे कैसे जगाना है ? उसके लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है। वह साक्षात आपमें हैं। केवल कुण्डलिनी का जागरण होने के बाद जिस तरह दिया जलाया जाता है, उसी तरह आपमें वह जलता है। जिस घर में परमात्मा का दिया जलता रहेगा वहाँ दुःख दर्द कहाँ ? गरीबी और परेशानियाँ कहाँ ? वहाँ तो सुख का संसार होना चाहिए। इसीलिए हम गाँव–गाँव सब जगह घूमते हैं। आपको मेरी विनम्र विनती है कि ये जो आपमें शक्ति है वह जागृत करवा लीजिए और सारे संसार के प्रपंच का उद्धार कीजिए। मैं आपको हाथ जोड़कर विनती करती हूँ।

परमात्मा आप पर कृपा करें।

एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि आत्म–साक्षात्कार के बाद परमेश्वर के राज्य में प्रस्थापित होने तक बहुत बाधाएं हैं, और श्री कल्कि शक्ति का सम्बंध इसी से जुड़ा हुआ है। आत्म–साक्षात्कार प्राप्त होने के बाद भी जो लोग अपनी पुरानी आदतों व प्रवृत्तियों में मग्न हैं उनकी स्थिति को 'योगभ्रष्ट' स्थिति कहते हैं।

सहस्रार का एक मन्त्र है। वह है 'निर्मला" जिसका अर्थ है कि प्रत्येक को स्वच्छ, सुथरा और निष्कलंक रहना चाहिए।

जब आत्मा का द्वार खुलता है तो किसी चीज़ की कमी नहीं रहती। माँ यही द्वार खोलती हैं। इसीलिए ये माँ गणेश को प्रिय हैं। यह मिलने पर दूसरी किसी भी चीज़ की चाहत नहीं रहती। इस तरह की स्थिति जब आती है तब समझ लीजिए कि आत्मसाक्षात्कार हो गया। फिर उसी में लीन हो कर आनन्दमग्न हो जाइए।

(परम पूज्य श्री माता जी)

अबोधिता एक ऐसा शाश्वत गुण है
जो न कभी लुप्त होता है
और न ही नष्ट।

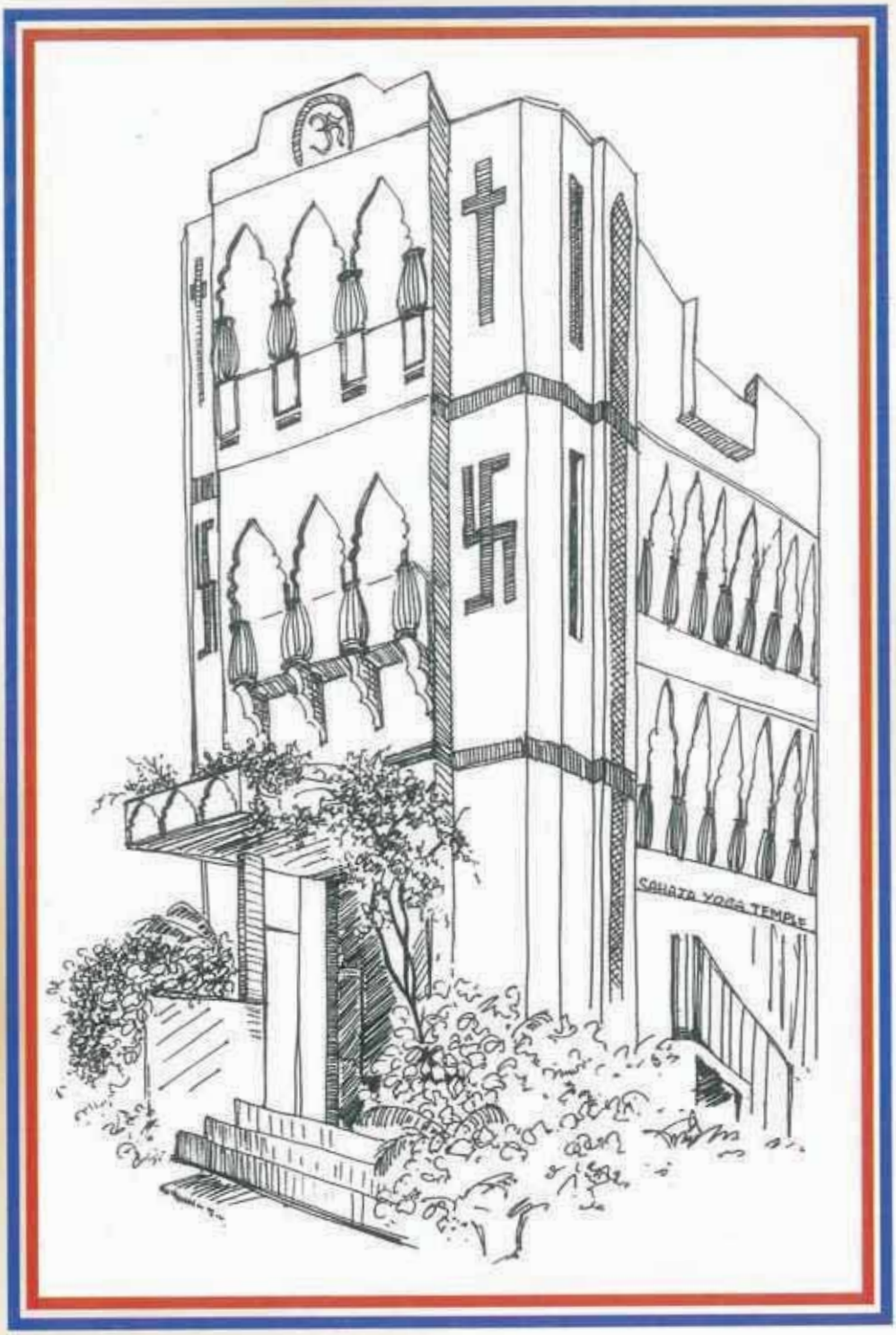
SAHAJA YOGA TEMPLE